ॐ श्री गणेशाय नमः

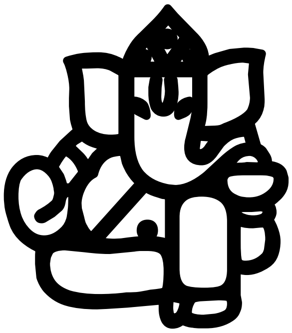

Horoscope of **Sample Horoscope**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम : Sample Horoscope [स्त्री]

सप्ताह के दिन में। : सोमवार

सोमवार में जन्म लेने से आप मधुर भाषि और रोचक होगें । आप ऐसे हालतों में शांन्त रहना चाहते है जहाँ बाकी लोग क्रोधित हो । मन में व्यक्त इरादे होगों ।

जन्म नक्षत्र : शताभिषा

जन्मनक्षत्र शतभिषा है। आपके आश्रय में आए हुए व्यक्ति निराश नहीं होंगे। आप उदार दिल की महिला हैं। आप व्यवहार में सरल और निर्मल हैं इस कारण कोई भी आपकी ओर उँगली नहीं उठा पायेगा। आप रचनात्मक कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाली नारी हैं।

अपने व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों से दूसरे लोगों को परिचित करना आप पसंद नहीं करती। कोई सूक्ष्मदृष्टि से आपके जीवन का अवलोकन करेगा तो ज़रूर पता चलेगा कि आपके जीवन में कुछ कमी है। यह होते हुए भी कमी के कारण को जान नहीं पायेंगे।

कभी कभी स्वभाव से चंचलता प्रकट हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों को नीतिबोध के साथ निर्वाह करने में निपुण हैं। परिवार के अन्य लोगों से अपेक्षा रखना निराशा का कारण बन सकता है। अपने विचार और धारणा को बदलना कठिन बात है। आपके विवाह के बाद आपके पति को बड़ा लाभ होगा।

आचरण से आप निष्ठावान महिला हैं। स्वभाव से आप गर्म मिज़ाज की हैं। इस कारण परिवार के बीच कलुषित वातावरण पैदा होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। किसी कारण पर कुछ दिन पति से दूर रहने का अवसर आ सकता है। वैचारिक मतभेद और पारिवारिक क्लेश बड़ा रूप न ले सकें, इस बात का विशेष ध्यान रखें। आपकी वाणी की मधुरता स्थिति को संभाल पाने में सहायक होगा।

वायु संबन्धी विकारों से बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। मूत्राशय के अन्य रोगों से बचते रहना भी आवश्यक है। रोग के चिन्ह दिखाई देते ही डाक्टरी जांच करवाना और उनकी सलाह को ध्यान में रखना लाभदायी होगा।

तिथि : दसमि

दशमी तिथि में जन्म होने से आप की विशाल मानसिकता प्रशंसनीय होगी। बहुत छोटी आयु से इस कला को हस्तगत करने में बड़ी कीर्ति प्राप्त होगी। आप शान्त भाव धारण करने वाले हैं। आप गंभीर मुखभाव धारण करने वाले हैं। आप अपनी संपन्नता दूसरों को दिखाने में रुचि नहीं रखते। आप स्वगृह और स्वसमुदाय के बीच स्नेह संपन्नता प्राप्त करेंगे। आप आमोद प्रमोद के बड़े पुजारी हैं। आप उदार हृदय, अत्यन्त नम्र व्यवहार वाले और कामी होंगे।

करण : विशथी

क्योंकि आपने बद्र (विशठि) करना में जन्म लिया है आप बहुत शान्तिशील होगों । जीवन के प्रति आपके शक्त रीतियाँ दूसरों के आँखें में आपको हृदयहीन बनाएगों । आप हमेशा उत्तरदयित्वो को अपनाने में खुश रहते है ।

नित्ययोग : ब्रह्मा

आपका जन्म ब्रह्म नित्ययोग में हुआ है। स्वभावतः आप आत्मज्ञान, विज्ञान तथा ज्ञान के धनी होंगे। आत्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास आपके

नैसर्गिक गुण हैं। आप सब तरह के लौकिक सुख पसन्द करते तो हैं पर आवश्यकता पड़ने पर आप सब कुछ न्यौधावर करने की तैयारी भी रखते हैं। इसलिए आप दूसरों का आदर प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान और धन दोनों के समान रूप के अधिकारी हैं। आपका जीवन विद्या से जुड़ा रहेगा। एक साथ अनेक विषयों में पारंगता प्राप्त होगी।

नाम	: Sample Horoscope
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 27 अप्रेल, 1992 सोमवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 11:50:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Ernakulam
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.58 पूरब , 9.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 45 मिनिट. 15 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **शताभिषा** - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: **कुंम्भ** - शनि
लग्न - लग्न का देव	: कर्क - चन्द्र
तिथि	: दसमि, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 06:03 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:29 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 12.26
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 31.5
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 18 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: सोमवार
कलिदिना	: 1860274
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: राहु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, स्त्री, धोड़
पक्षी, पेड	: मोर, कडंम्ब वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 3 / 12
चन्द्र वेला	: 7 / 36
चन्द्र क्रिया	: 12 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: विशथी
नित्ययोग	: ब्रह्मा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मेष - भरणी
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Taurus
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 56:4:0 - मृगशिरा
योगी गृह	: मंगल
द्वगुणति योगी	: शुक्र
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: मघा - केतु
आत्म करक - करकांसा	: मंगल - मिथुन
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शनि
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: कन्या

धन अरुढ़ा : धनु

गृहों का रेखांश
गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	119:50:50	गुरु	154:39:4 रितु
चन्द्र	333:0:1	शनि	317:41:50
रवि	37:14:29	युरेनस	288:0:15 रितु
बुध	10:24:19	नेप्टयून	288:56:42 रितु
शुक्र	24:35:45	प्लूटो	231:58:45 रितु
मंगल	353:21:22	नोड	273:35:48

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 23डिग्रि.45 मिनिट.14 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	96:5:35	कर्क	6:5:35	पुष्य	1
चन्द्र	309:14:46	कुंम्भ	9:14:46	शताभिषा	1
रवि	13:29:14	मेष	13:29:14	भरणी	1
बुध	346:39:4	मीन	16:39:4	उत्तर भद्रपाढा	4
शुक्र	0:50:30	मेष	0:50:30	अशविनि	1
मंगल	329:36:7	कुंम्भ	29:36:7	पूर्व भद्रपाढा	3
गुरु	130:53:49	सिंह	10:53:49रितु	मघा	4
शनि	293:56:35	मकर	23:56:35	धनिष्ठ	1
राहु	249:50:33	धनु	9:50:33	मूल	3
केतु	69:50:33	मिथुन	9:50:33	आर्द्र	1
गुलिक	144:42:44	सिंह	24:42:44	पूर्व फालगुनी	4

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पुष्य	शनि	बुध	शुक्र
चन्द्र	शताभिषा	राहु	गुरु	बुध
रवि	भरणी	शुक्र	शुक्र	शुक्र
बुध	उत्तर भद्रपाढा	शनि	गुरु	राहु
शुक्र	अशविनि	केतु	शुक्र	शुक्र
मंगल	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	चन्द्र	राहु
गुरु	मघा	केतु	शनि	राहु
शनि	धनिष्ठ	मंगल	मंगल	शुक्र
राहु	मूल	केतु	शनि	बुध
केतु	आर्द्र	राहु	गुरु	रवि
गुलिक	पूर्व फालगुनी	शुक्र	बुध	रवि

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	कर्क	6:5:35	पुष्य / 1	गुरु	सिंह	10:53:49R	मघा / 4
चन्द्र	कुंम्भ	9:14:46	शताभिषा / 1	शनि	मकर	23:56:35	धनिष्ठ / 1
रवि	मेष	13:29:14	भरणी / 1	राहु	धनु	9:50:33	मूल / 3
बुध	मीन	16:39:4	उत्तर भद्रपाढा / 4	केतु	मिथुन	9:50:33	आर्द्र / 1
शुक्र	मेष	0:50:30	अशविनि / 1	गुलिक	सिंह	24:42:44	पूर्व फालगुनी / 4
मंगल	कुंम्भ	29:36:7	पूर्व भद्रपाढा / 3				

राशी

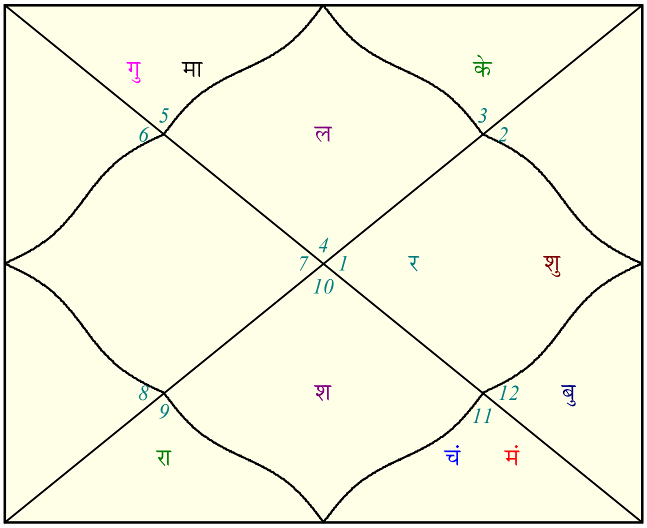

नवांश

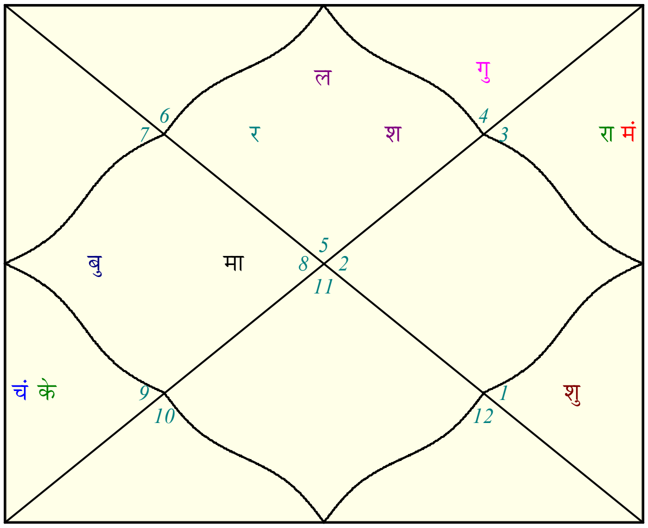

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 14 साल, 6 महीने, 6 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

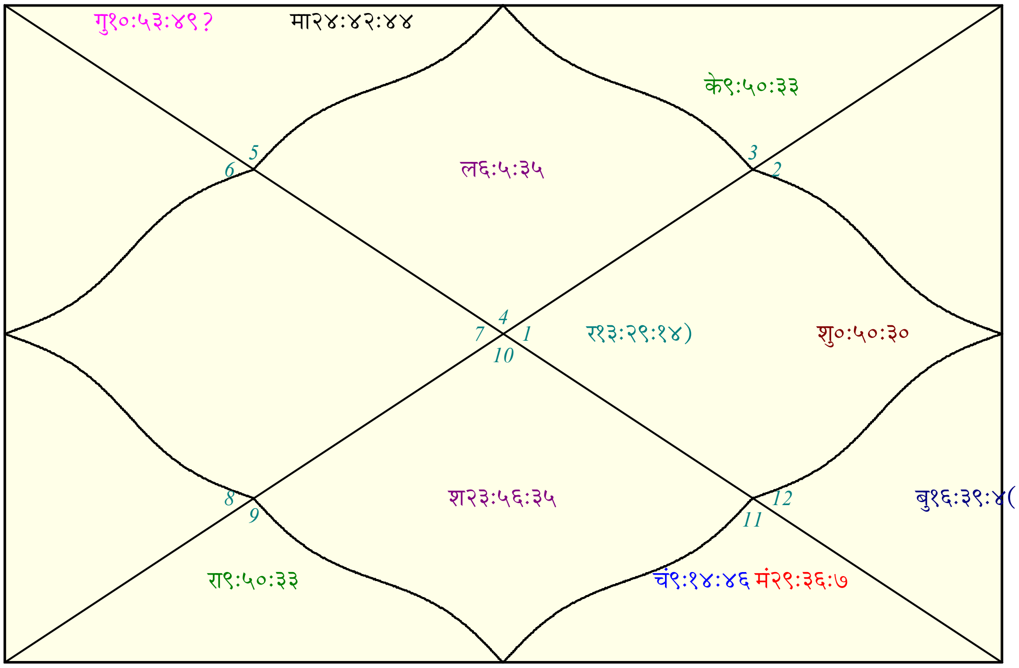

? विपरीत परिस्थिती) श्रेष्ट समय (क्षीण परिस्थिती ; सयहोग

नवांशः	चं::धनु	र::सिंह	बु::वृशचिक	शु::मेष	मं::मिथुन
गु::कर्क	श::सिंह	रा::मिथुन	के::धनु	ल::सिंह	मा::वृशचिक

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 14 साल, 6 महीने, 6 दिन

भाव कुंडली

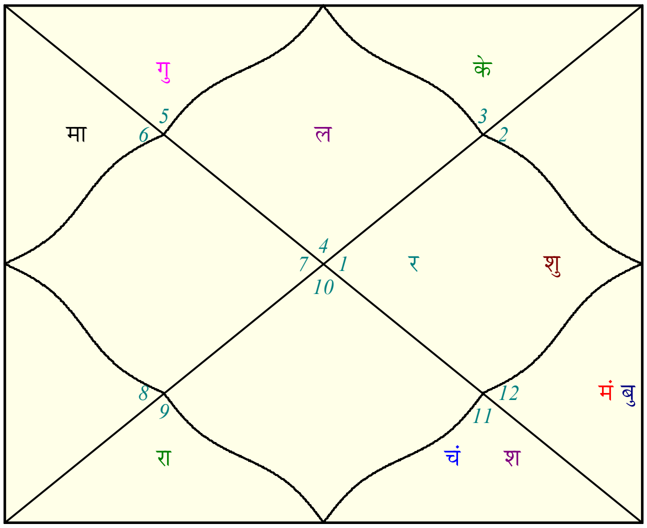

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	81:12:48	96:5:35	111:12:48	
2	111:12:48	126:20:1	141:27:13	गु
3	141:27:13	156:34:26	171:41:39	मा
4	171:41:39	186:48:52	201:41:39	
5	201:41:39	216:34:26	231:27:13	
6	231:27:13	246:20:1	261:12:48	रा
7	261:12:48	276:5:35	291:12:48	
8	291:12:48	306:20:1	321:27:13	चं,श
9	321:27:13	336:34:26	351:41:39	बु,मं
10	351:41:39	6:48:52	21:41:39	र,शु
11	21:41:39	36:34:26	51:27:13	
12	51:27:13	66:20:1	81:12:48	के

सुदर्शन चक्र

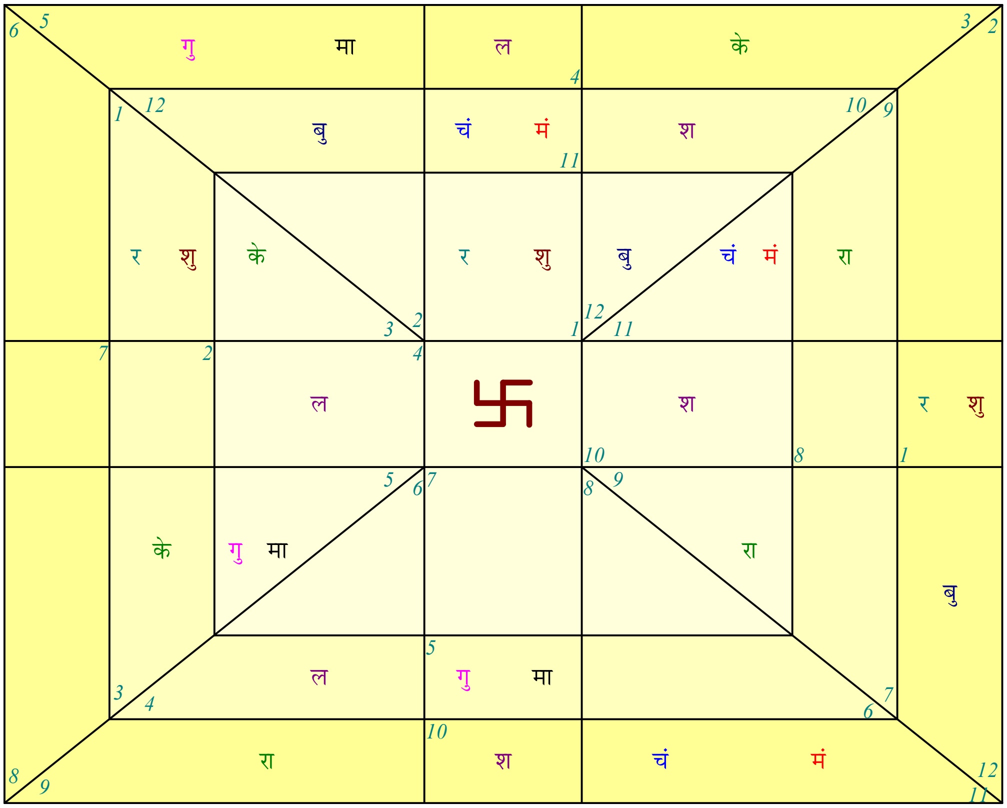

चं	=	चन्द्र	र	=	रवि	बु	=	बुध
शु	=	शुक्र	मं	=	मंगल	गु	=	गुरु
श	=	शनि	रा	=	राहु	के	=	केतु

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	15:22:33	16:55:48
बुध	अर्धप्रहर	9:9:33	10:42:48
मंगल	मृत्यु	7:36:18	9:9:33
गुरु	यमकंठक	10:42:48	12:16:3
शनि	गुलिक	13:49:18	15:22:33

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	147:51:54	सिंह	27:51:54	उत्तर फालगुनी	1
अर्धप्रहर	59:16:8	वृषभ	29:16:8	मृगशिरा	2
मृत्यु	36:50:33	वृषभ	6:50:33	कृत्तिका	4
यमकंठक	80:40:9	मिथुन	20:40:9	पुर्नवासु	1
गुलिक	124:31:9	सिंह	4:31:9	मघा	2
परिवेष	33:10:45	वृषभ	3:10:45	कृत्तिका	2
इंद्रचाप	326:49:14	कुंम्भ	26:49:14	पूर्व भद्रपाढा	3
व्यथिपात	213:10:45	वृशचिक	3:10:45	विशखा	4
उपकेतु	343:29:14	मीन	13:29:14	उत्तर भद्रपाढा	4
धूम	146:49:14	सिंह	26:49:14	उत्तर फालगुनी	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	उत्तर फालगुनी	रवि	चन्द्र	शनि
अर्धप्रहर	मृगशिरा	मंगल	शनि	चन्द्र
मृत्यु	कृत्तिका	रवि	बुध	शनि
यमकंठक	पुर्नवासु	गुरु	गुरु	बुध
गुलिक	मघा	केतु	चन्द्र	केतु
परिवेष	कृत्तिका	रवि	शनि	शनि
इंद्रचाप	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	शुक्र	शुक्र
व्यथिपात	विशखा	गुरु	राहु	चन्द्र
उपकेतु	उत्तर भद्रपाढा	शनि	राहु	शनि
धूम	उत्तर फालगुनी	रवि	रवि	राहु

उपग्रह राशी

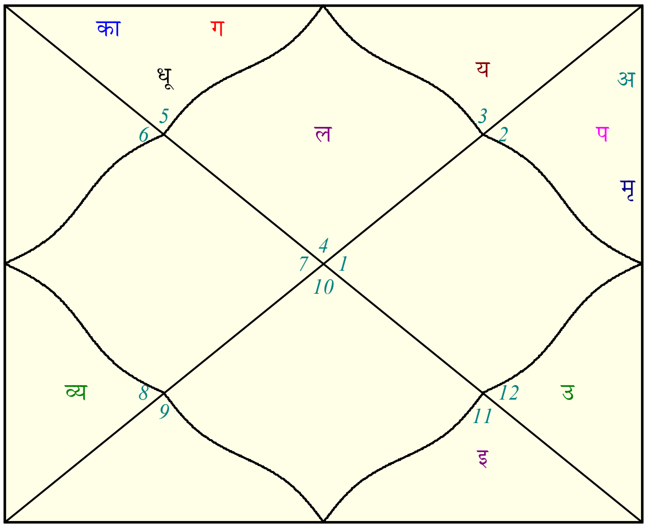

का	=	काल	अ	=	अर्धप्रहर
मृ	=	मृत्यु	य	=	यमकंठक
ग	=	गुलिक	प	=	परिवेष
इ	=	इंद्रचाप	व्य	=	व्यथिपात
उ	=	उपकेतु	धू	=	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

	कारक	गृह	
१	आत्म करक	मंगल	करकांसा: मिथुन
२	अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	शनि	
३	भ्रात्रि (बाई / बहन)	बुध	
४	मात्रि (माता)	रवि	
५	पुत्र (बच्चे)	गुरु	
६	ज्ञाति (रिशतेदार)	चन्द्र	
७	दारा (पति या पत्नी)	शुक्र	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	कन्या
P 2	धन अरुढ़ा	धनु
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	कन्या
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	तुला
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	वृषभ
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	मेष
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	मकर
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	धनु
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	मकर
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	धनु
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	मीन
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	धनु

अरुढ़ चक्र

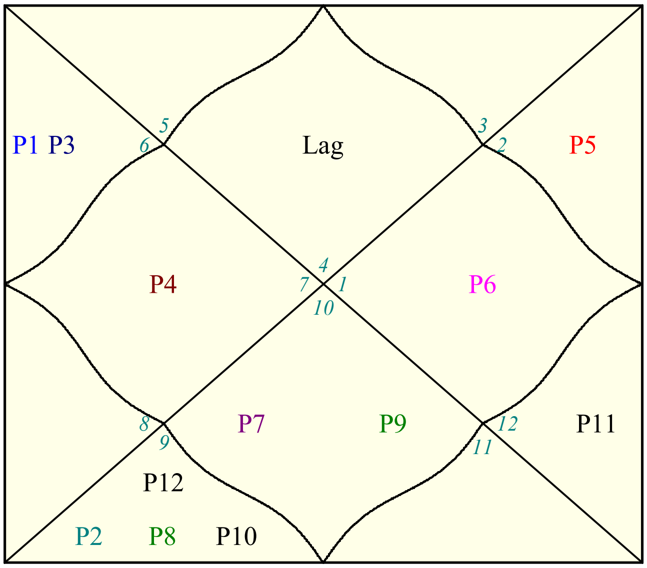

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	4:	11	1	12:	1	11	5	10:	9	3	5
औरा	4:	5	5	5	5	4:	5	5	5	5	4:
द्रिख्खन	4:	11	5	4:	1	7	9	6:	9	3	1
चतूथांश	4:	2:	4:	6:	1	8:	8:	7	12:	6:	2:
सप्तांश	11	1	4:	9	1	5	7	9	11	5	10:
नवांश	5	9	5	8:	1	3	4:	5	3	9	8:
दशांश	2:	2:	5	1	1	8:	8:	1	12:	6:	1
व्दादशांश	6:	2:	6:	6:	1	10:	9	7	12:	6:	2:
सोडांश	4:	9	8:	5	1	8:	10:	1	2:	2:	6:
विंशाम्स	5	3	9	4:	1	4:	4:	4:	11	11	1
चतुर्विंशाम्स	8:	12:	3	5	5	4:	1	11	12:	12:	12:
भम्श	3	3	1	12:	1	9	10:	1	9	3	11
त्रिंमशांश	6:	11	9	12:	1	7	9	10:	11	11	3
खवेदांश	3	1	6:	5	2:	4:	3	2:	2:	2:	9
	10:	6:	9	9	2:	1	9	12:	11	11	6:
शष्टियांश	4:	5	3	9	2:	10:	2:	9	4:	10:	6:
ओजराशी गणन	5	11	11	8	13	7	9	10	9	9	7

1-मेष	2-वृषभ	3-मिथुन	4-कर्क	5-सिंह	6-कन्या
7-तुला	8-वृशचिक	9-धनु	10-मकर	11-कुंम्भ	12-मीन

वर्गोत्तम

शुक्र वर्गोतम में है ।

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	चं	=श	+मं	=गु	=मं	=श	+र	^श	~गु	~बु	र
औरा	चं	+र	^र	+र	~र	+चं	+र	~र	~र	+र	चं
द्रिख्खन	चं	=श	^र	~चं	=मं	=शु	^गु	+बु	~गु	~बु	मं
चतूथांश	चं	=शु	+चं	^बु	=मं	^मं	+मं	+शु	~गु	~बु	शु
सप्तांश	श	=मं	+चं	=गु	=मं	+र	~शु	=गु	+श	+र	श
नवांश	र	=गु	^र	=मं	=मं	~बु	+चं	~र	+बु	+गु	मं
दशांश	शु	=शु	^र	=मं	=मं	^मं	+मं	~मं	~गु	~बु	मं
व्दादशांश	बु	=शु	=बु	^बु	=मं	=श	^गु	+शु	~गु	~बु	शु
सोडांश	चं	=गु	+मं	+र	=मं	^मं	=श	~मं	+शु	=शु	बु
विंशाम्स	र	+बु	+गु	~चं	=मं	+चं	+चं	~चं	+श	~श	मं
चतुर्विंशाम्स	मं	=गु	=बु	+र	~र	+चं	+मं	^श	~गु	+गु	गु
भम्श	बु	+बु	+मं	=गु	=मं	+गु	=श	~मं	~गु	~बु	श
त्रिंमशांश	बु	=श	+गु	=गु	=मं	=शु	^गु	^श	+श	~श	बु
खवेदांश	बु	=मं	=बु	+र	^शु	+चं	~बु	+शु	+शु	=शु	गु
	श	+बु	+गु	=गु	^शु	^मं	^गु	=गु	+श	~श	बु
शष्टियांश	चं	+र	=बु	=गु	^शु	=श	~शु	=गु	=चं	~श	बु

^ अपना वर्ग   + क़्ध्द्रत्ड्डदड्डथ्क्र   = निश्पक्षीय   ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट्र दिया जाता है ।

गृहों	षढ्वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	1-...	1-...	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स
रवि	4-चामरांस	4-चामरांस	5-सिंहासनाम्स	6-कीरलाम्स
बुध	1-...	1-...	1-...	2-बीढ़काम्स
शुक्र	0-	0-	1-...	3-कुसुमाम्स
मंगल	1-...	1-...	4-गेपुराम्स	6-कीरलाम्स
गुरु	4-चामरांस	4-चामरांस	4-गेपुराम्स	6-कीरलाम्स
शनि	3-व्यजनांमस	3-व्यजनांमस	3-उत्तमामस	5-कणठुकाम्स

षोढ़सवर्ग चार्ट

राशी[D1]

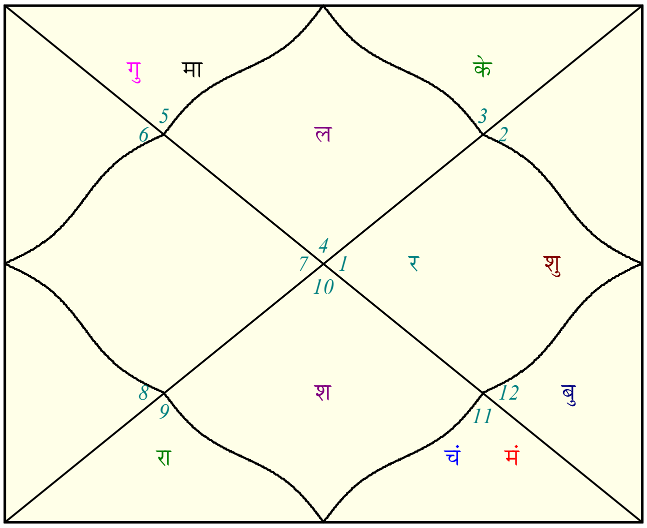

औरा[D2]

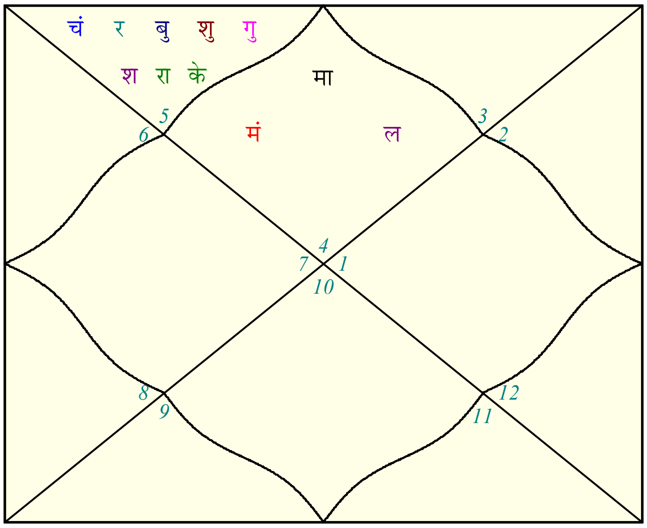

द्रिख्खन[D3]

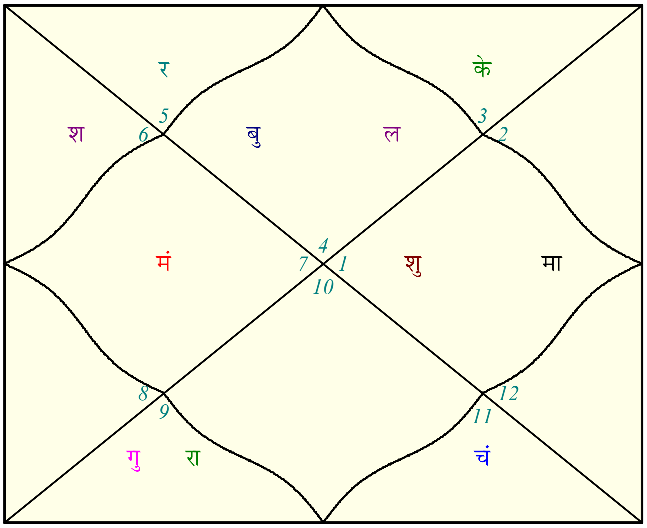

चतूर्थांश[D4]

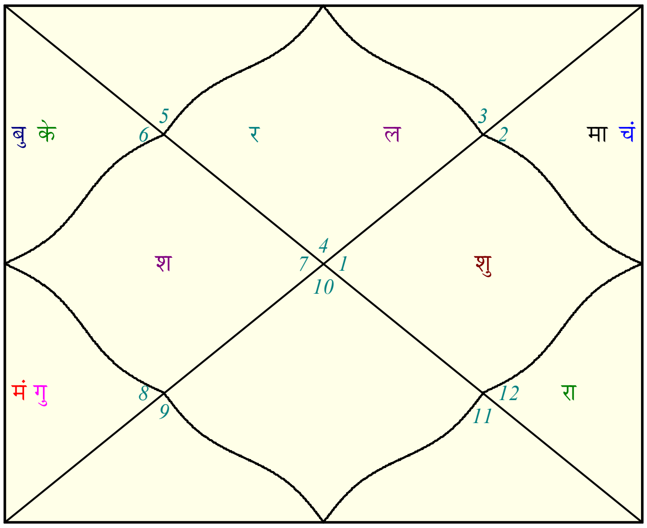

सप्तांश[D7]

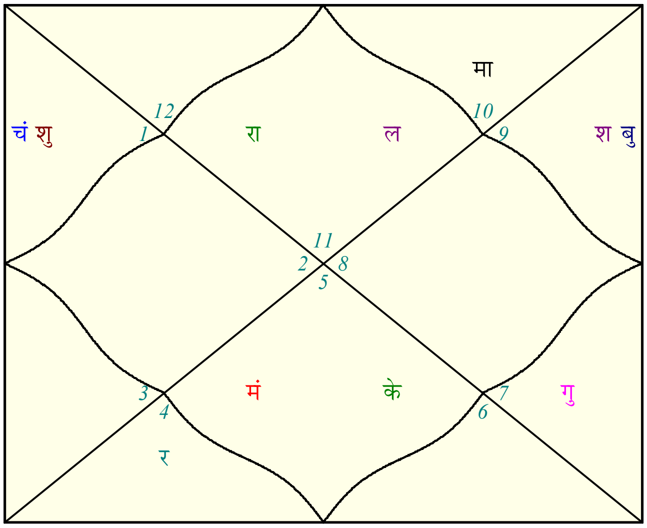

नवांश[D9]

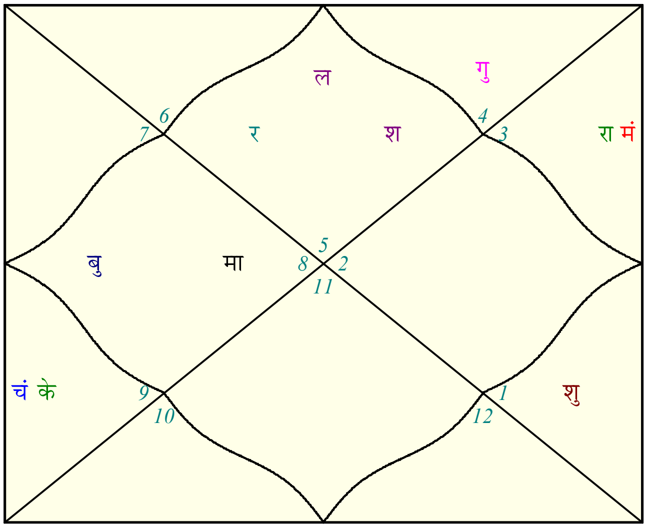

दशांश[D10]

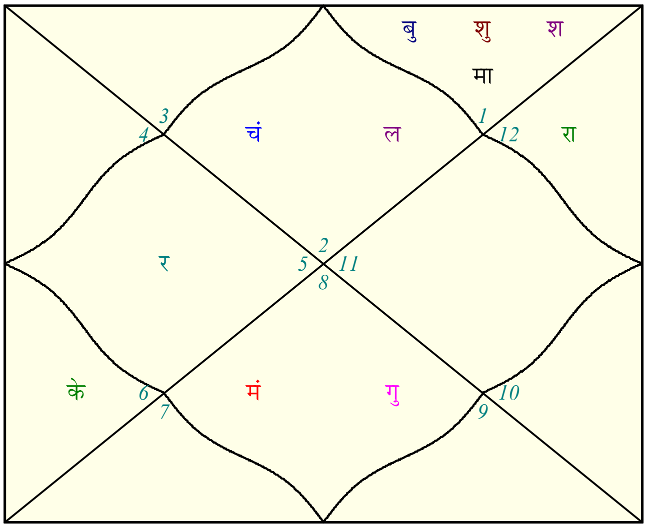

व्दादशांश[D12]

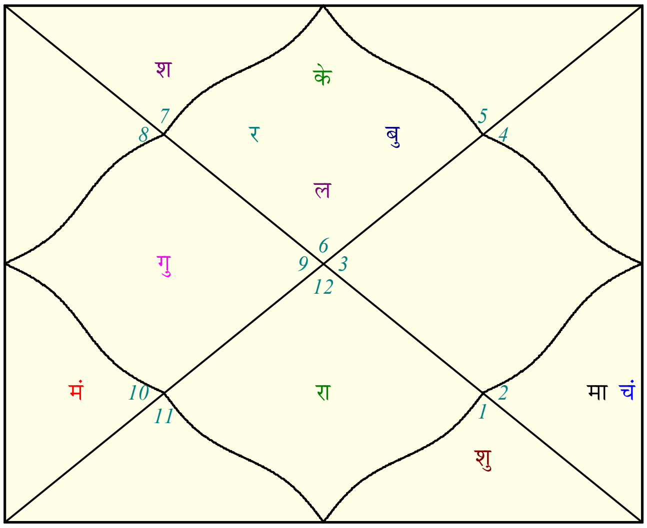

सोडांश[D16]

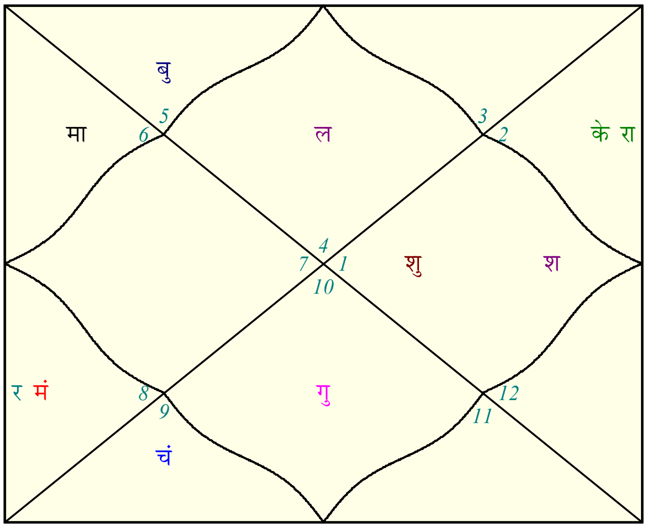

विंशाम्स[D20]

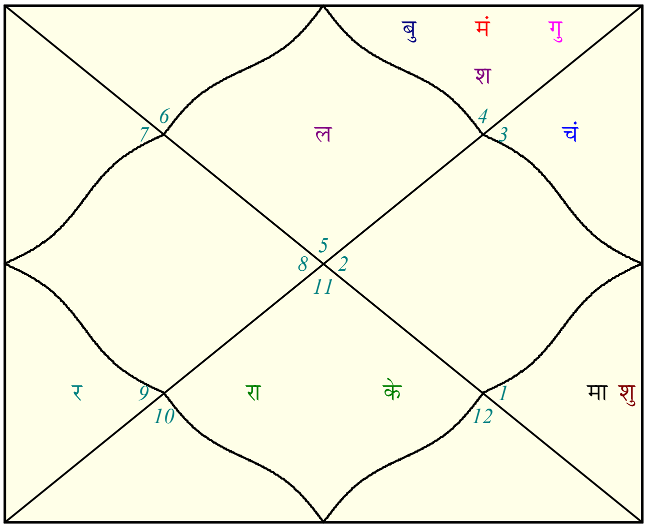

चतुर्विंशाम्स[D24]

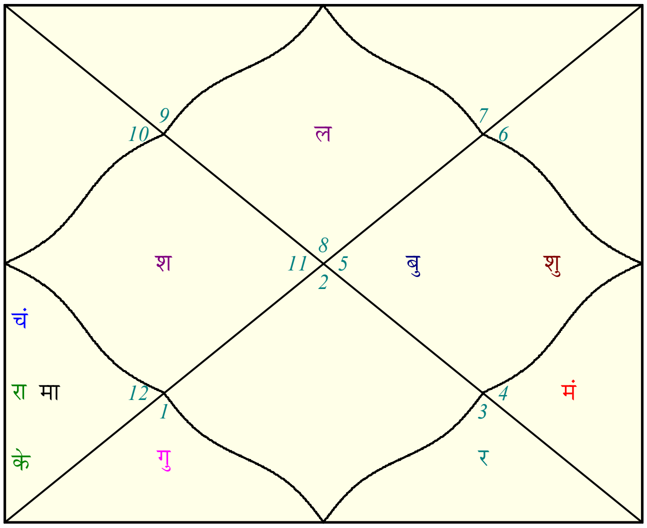

भम्श[D27]

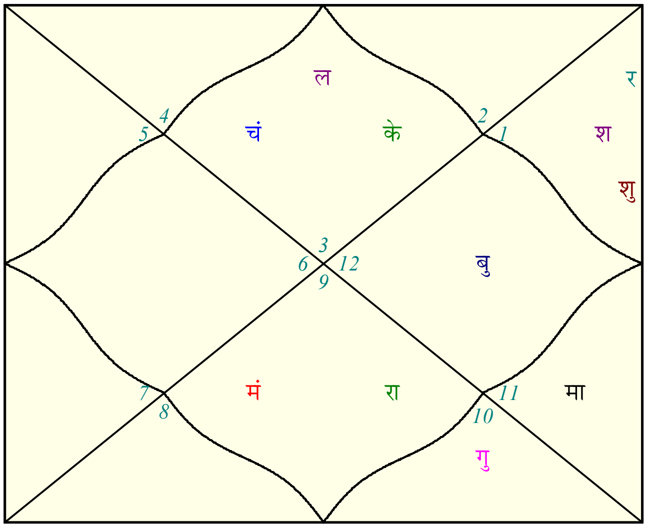

त्रिंमशांश[D30]

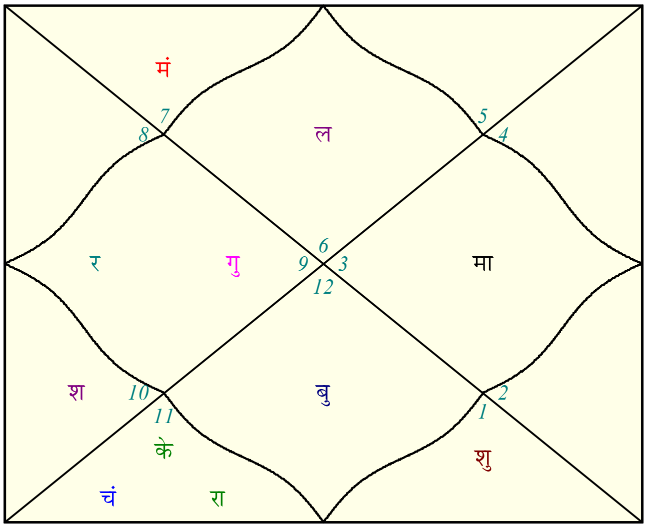

खवेदांश[D40]

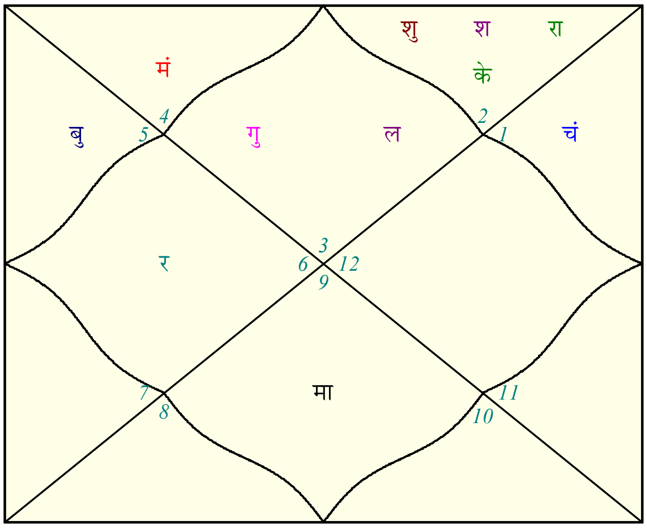

[D45]

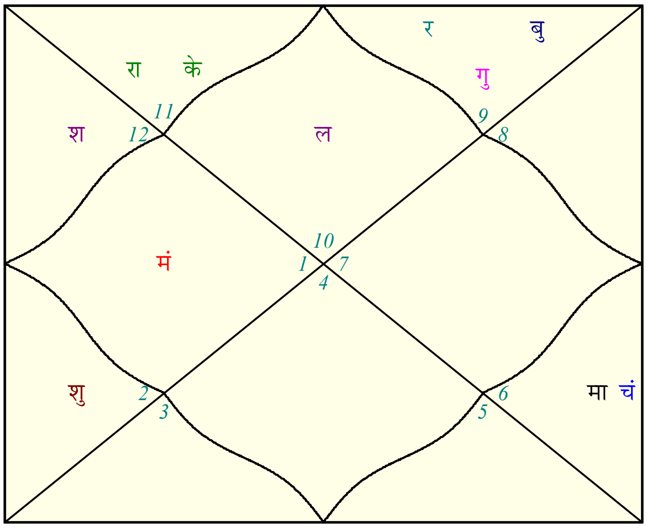

शष्टियांश[D60]

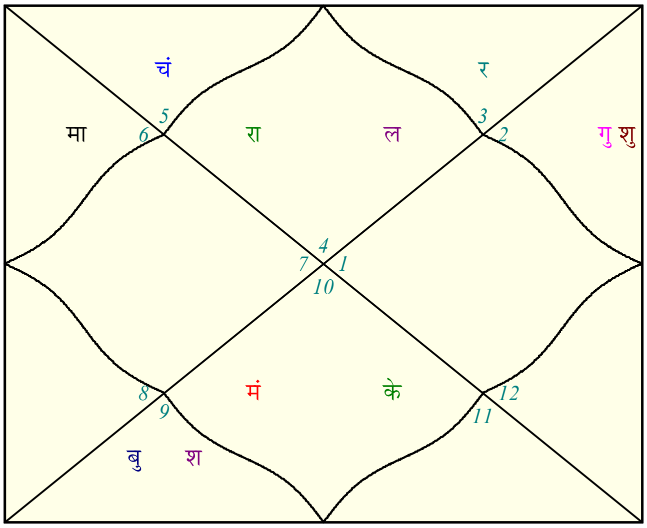

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1				1			1	3
वृषभ			1			1	1	1	4
मिथुन		1	1	1	1	1	1		6
कर्क	1		1	1	1	1			5
सिंह	1			1		1			3
कन्या		1	1					1	3
तुला		1	1	1	1				4
वृशचिक	1	1			1	1	1		5
धनु	1		1	1	1			1	5
मकर		1	1	1					3
कुंम्भ	1	1		1		1			4
मीन			1		1	1	1		4
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1				1	1	1	5
वृषभ		1	1		1			1	4
मिथुन						1		1	2
कर्क	1	1	1				1		4
सिंह			1		1		1		3
कन्या				1	1		1	1	4
तुला		1		1	1		1	1	5
वृशचिक	1	1	1		1		1		5
धनु	1	1	1		1	1		1	6
मकर		1	1			1	1		4
कुंम्भ		1	1		1		1		4
मीन				1	1				2
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1			1	1	3
वृषभ	1		1	1	1			1	5
मिथुन				1		1			2
कर्क	1		1	1		1	1	1	6
सिंह		1	1	1	1		1	1	6
कन्या	1	1			1		1		4
तुला					1		1	1	3
वृशचिक	1		1	1	1		1		5
धनु	1	1	1	1	1			1	6
मकर			1			1	1		3
कुंम्भ		1	1	1	1		1	1	6
मीन	1	1	1		1	1			5
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शुक्र

	चं	**र**	**बु**	**शु**	**मं**	**गु**	**श**	**ल**	सभी मिलाकार
मेष	1			1	1	1	1		5
वृषभ	1		1	1		1	1	1	6
मिथुन	1			1	1	1			4
कर्क			1	1	1			1	4
सिंह			1	1			1	1	4
कन्या	1						1	1	3
तुला	1				1		1	1	4
वृशचिक		1	1	1			1	1	5
धनु	1			1	1	1			4
मकर	1		1	1	1				4
कुंम्भ	1	1		1				1	4
मीन	1	1				1	1	1	5
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - मंगल

	चं	**र**	**बु**	**शु**	**मं**	**गु**	**श**	**ल**	सभी मिलाकार
मेष	1						1	1	3
वृषभ			1		1	1		1	4
मिथुन		1				1			2
कर्क	1		1			1	1	1	5
सिंह		1	1		1		1		4
कन्या		1		1	1		1	1	5
तुला							1		1
वृशचिक				1	1		1		3
धनु	1				1			1	3
मकर		1	1			1	1		4
कुंम्भ		1		1	1				3
मीन				1	1				2
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1	1					1	3
वृषभ		1		1	1	1	1	1	6
मिथुन	1	1	1			1	1		5
कर्क		1	1					1	3
सिंह	1		1	1	1	1		1	6
कन्या				1	1	1			3
तुला	1	1				1		1	4
वृशचिक		1	1		1	1		1	5
धनु	1	1	1	1	1		1	1	7
मकर		1	1	1				1	4
कुंम्भ		1		1	1	1			4
मीन	1		1		1	1	1	1	6
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1			1			1	4
वृषभ		1					1	1	3
मिथुन					1	1	1		3
कर्क	1	1			1	1		1	5
सिंह			1						1
कन्या				1				1	2
तुला		1	1					1	3
वृशचिक		1	1		1		1		4
धनु	1		1		1	1		1	5
मकर		1	1		1	1			4
कुंम्भ		1	1	1					3
मीन				1			1		2
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5	3	5	3	3	4	26
वृषभ	4	4	5	6	4	6	3	32
मिथुन	6	2	2	4	2	5	3	24
कर्क	5	4	6	4	5	3	5	32
सिंह	3	3	6	4	4	6	1	27
कन्या	3	4	4	3	5	3	2	24
तुला	4	5	3	4	1	4	3	24
वृशचिक	5	5	5	5	3	5	4	32
धनु	5	6	6	4	3	7	5	36
मकर	3	4	3	4	4	4	4	26
कुंम्भ	4	4	6	4	3	4	3	28
मीन	4	2	5	5	2	6	2	26
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

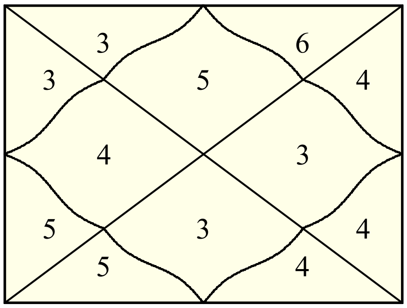

रवि अष्टकवर्ग 48

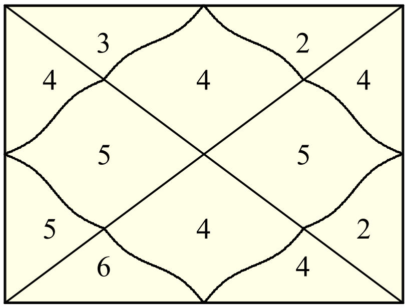

बुध अष्टकवर्ग 54

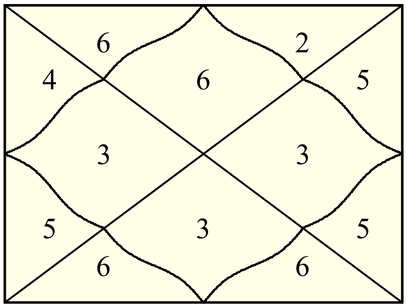

शुक्र अष्टकवर्ग 52

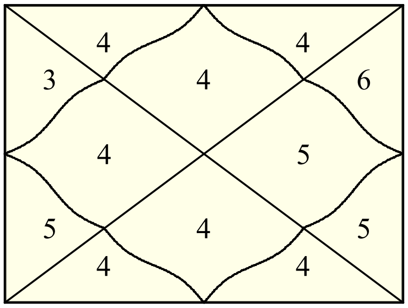

मंगल अष्टकवर्ग 39

गुरु अष्टकवर्ग 56

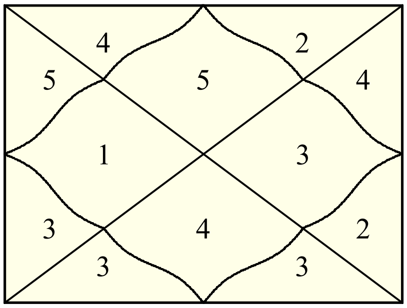

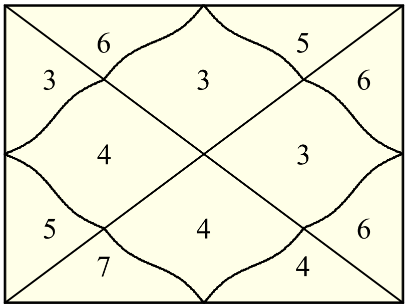

शनि अष्टकवर्ग 39

सर्व अष्टकवर्ग 337

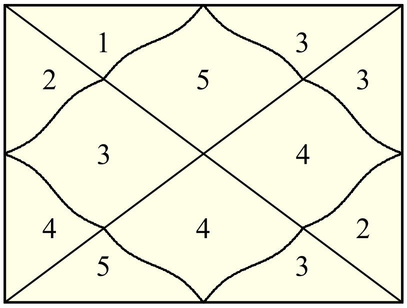

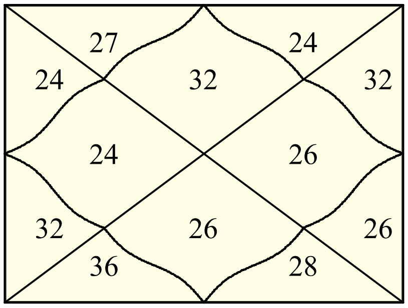

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 7

रवि अष्टकवर्ग 15

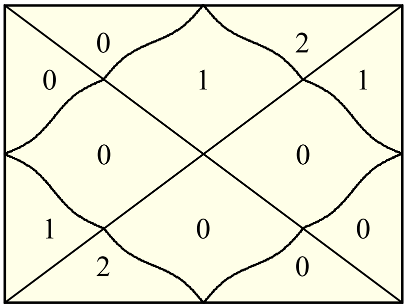

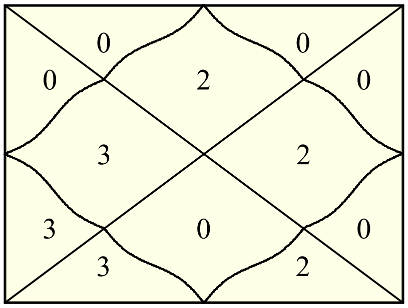

बुध अष्टकवर्ग 15

शुक्र अष्टकवर्ग 7

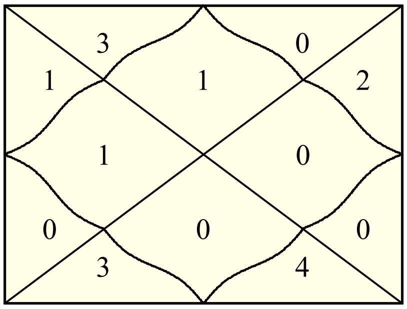

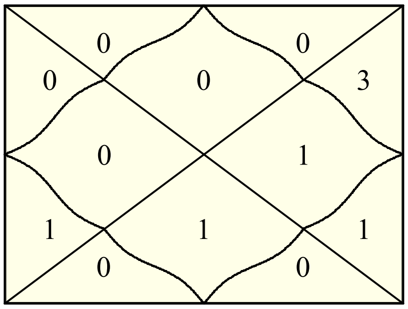

मंगल अष्टकवर्ग 9

गुरु अष्टकवर्ग 17

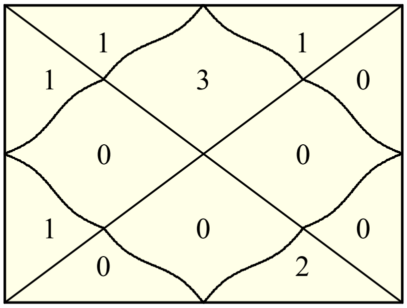

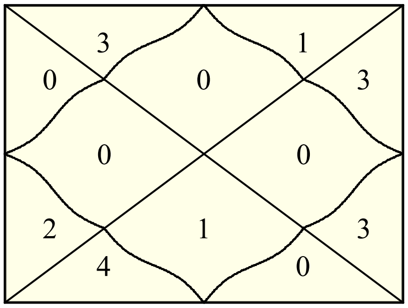

शनि अष्टकवर्ग 15

सर्व अष्टकवर्ग 85

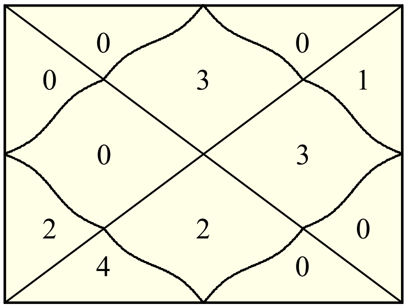

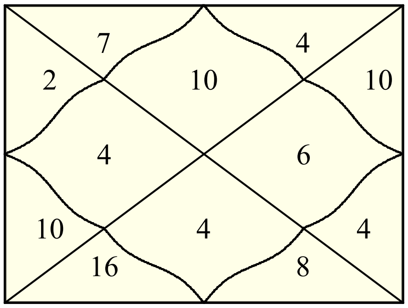

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 7

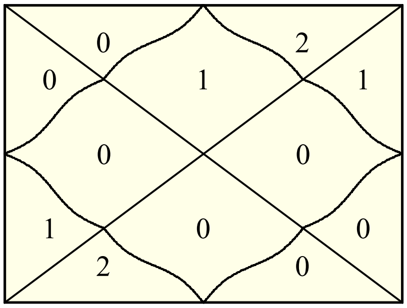

रवि अष्टकवर्ग 14

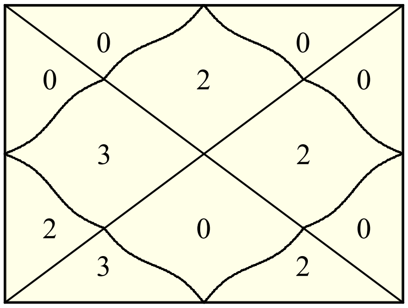

बुध अष्टकवर्ग 14

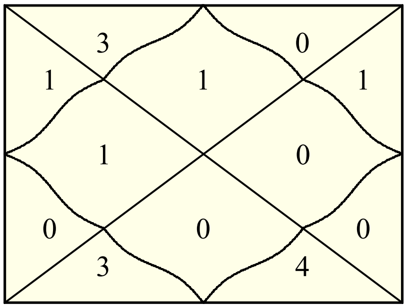

शुक्र अष्टकवर्ग 6

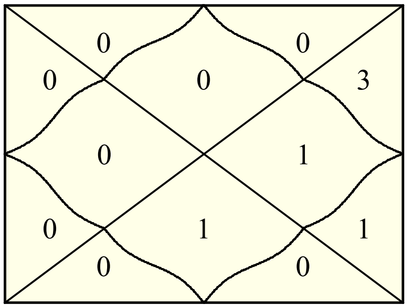

मंगल अष्टकवर्ग 9

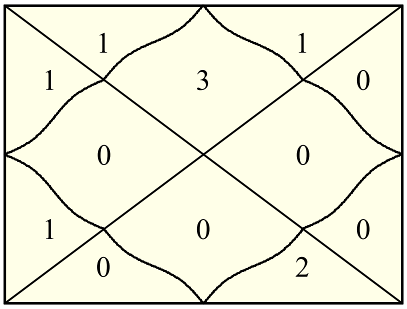

गुरु अष्टकवर्ग 16

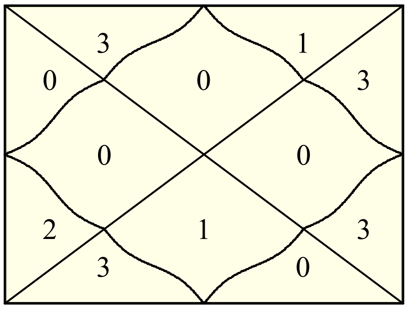

शनि अष्टकवर्ग 13

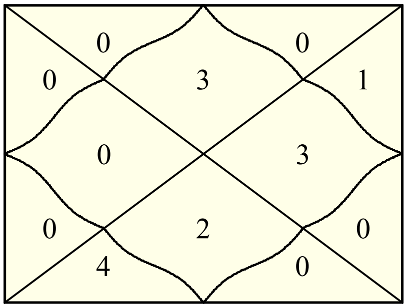

सर्व अष्टकवर्ग 79

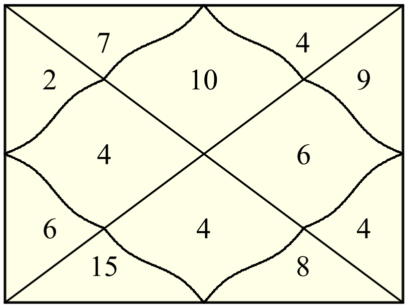

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ड्डुह्मण्प दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

गुरु > 14:06:07 शनि > 30:06:07 बुध > 49:06:06
केतु > 66:06:07 शुक्र > 73:06:06 रवि > 93:06:06

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)
जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 14 साल, 6 महीने, 6 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
राहू	गुरु	27-04-1992	09-12-1993
राहू	शनि	09-12-1993	15-10-1996
राहू	बुध	15-10-1996	04-05-1999
राहू	केतू	04-05-1999	22-05-2000
राहू	शुक्र	22-05-2000	22-05-2003
राहू	सूर्य	22-05-2003	15-04-2004
राहू	चन्द्र	15-04-2004	15-10-2005
राहू	कुज	15-10-2005	03-11-2006
गुरु	गुरु	03-11-2006	21-12-2008
गुरु	शनि	21-12-2008	04-07-2011
गुरु	बुध	04-07-2011	09-10-2013
गुरु	केतू	09-10-2013	15-09-2014
गुरु	शुक्र	15-09-2014	16-05-2017
गुरु	सूर्य	16-05-2017	04-03-2018
गुरु	चन्द्र	04-03-2018	04-07-2019
गुरु	कुज	04-07-2019	09-06-2020
गुरु	राहू	09-06-2020	03-11-2022
शनि	शनि	03-11-2022	05-11-2025
शनि	बुध	05-11-2025	15-07-2028
शनि	केतू	15-07-2028	24-08-2029
शनि	शुक्र	24-08-2029	24-10-2032
शनि	सूर्य	24-10-2032	06-10-2033
शनि	चन्द्र	06-10-2033	07-05-2035
शनि	कुज	07-05-2035	15-06-2036
शनि	राहू	15-06-2036	22-04-2039
शनि	गुरु	22-04-2039	02-11-2041
बुध	बुध	02-11-2041	31-03-2044
बुध	केतू	31-03-2044	28-03-2045
बुध	शुक्र	28-03-2045	27-01-2048
बुध	सूर्य	27-01-2048	02-12-2048
बुध	चन्द्र	02-12-2048	04-05-2050
बुध	कुज	04-05-2050	01-05-2051

बुध	राहू	01-05-2051	18-11-2053
बुध	गुरु	18-11-2053	23-02-2056
बुध	शनि	23-02-2056	03-11-2058
केतू	केतू	03-11-2058	01-04-2059
केतू	शुक्र	01-04-2059	31-05-2060
केतू	सूर्य	31-05-2060	06-10-2060
केतू	चन्द्र	06-10-2060	07-05-2061
केतू	कुज	07-05-2061	03-10-2061
केतू	राहू	03-10-2061	21-10-2062
केतू	गुरु	21-10-2062	27-09-2063
केतू	शनि	27-09-2063	05-11-2064
केतू	बुध	05-11-2064	02-11-2065
शुक्र	शुक्र	02-11-2065	04-03-2069
शुक्र	सूर्य	04-03-2069	04-03-2070
शुक्र	चन्द्र	04-03-2070	03-11-2071
शुक्र	कुज	03-11-2071	02-01-2073
शुक्र	राहू	02-01-2073	03-01-2076
शुक्र	गुरु	03-01-2076	03-09-2078
शुक्र	शनि	03-09-2078	02-11-2081
शुक्र	बुध	02-11-2081	02-09-2084
शुक्र	केतू	02-09-2084	02-11-2085
सूर्य	सूर्य	02-11-2085	20-02-2086
सूर्य	चन्द्र	20-02-2086	22-08-2086
सूर्य	कुज	22-08-2086	27-12-2086
सूर्य	राहू	27-12-2086	21-11-2087

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : गुरु   अपहार : शुक्र

1.शु	15-09-2014	>>	24-02-2015	**2.र**	24-02-2015	>>	14-04-2015
3.चं	14-04-2015	>>	04-07-2015	**4.मं**	04-07-2015	>>	30-08-2015
5.रा	30-08-2015	>>	23-01-2016	**6.गु**	23-01-2016	>>	01-06-2016
7.श	01-06-2016	>>	02-11-2016	**8.बु**	02-11-2016	>>	20-03-2017
9.के	20-03-2017	>>	16-05-2017				

दशा : गुरु अपहार : रवि

1.र	16-05-2017	>>	30-05-2017	**2.चं**	30-05-2017	>>	24-06-2017
3.मं	24-06-2017	>>	11-07-2017	**4.रा**	11-07-2017	>>	24-08-2017
5.गु	24-08-2017	>>	02-10-2017	**6.श**	02-10-2017	>>	17-11-2017
7.बु	17-11-2017	>>	28-12-2017	**8.के**	28-12-2017	>>	14-01-2018
9.शु	14-01-2018	>>	04-03-2018				

दशा : गुरु अपहार : चन्द्र

1.चं	04-03-2018	>>	14-04-2018	**2.मं**	14-04-2018	>>	12-05-2018
3.रा	12-05-2018	>>	24-07-2018	**4.गु**	24-07-2018	>>	27-09-2018
5.श	27-09-2018	>>	13-12-2018	**6.बु**	13-12-2018	>>	20-02-2019
7.के	20-02-2019	>>	21-03-2019	**8.शु**	21-03-2019	>>	10-06-2019
9.र	10-06-2019	>>	04-07-2019				

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	04-07-2019	>>	24-07-2019	**2.रा**	24-07-2019	>>	13-09-2019
3.गु	13-09-2019	>>	29-10-2019	**4.श**	29-10-2019	>>	22-12-2019
5.बु	22-12-2019	>>	08-02-2020	**6.के**	08-02-2020	>>	28-02-2020
7.शु	28-02-2020	>>	25-04-2020	**8.र**	25-04-2020	>>	12-05-2020
9.चं	12-05-2020	>>	09-06-2020				

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	09-06-2020	>>	18-10-2020	**2.गु**	18-10-2020	>>	12-02-2021
3.श	12-02-2021	>>	01-07-2021	**4.बु**	01-07-2021	>>	02-11-2021
5.के	02-11-2021	>>	23-12-2021	**6.शु**	23-12-2021	>>	19-05-2022
7.र	19-05-2022	>>	01-07-2022	**8.चं**	01-07-2022	>>	12-09-2022
9.मं	12-09-2022	>>	03-11-2022				

दशा : शनि अपहार : शनि

1.श	03-11-2022	>>	26-04-2023	**2.बु**	26-04-2023	>>	28-09-2023
3.के	28-09-2023	>>	01-12-2023	**4.शु**	01-12-2023	>>	01-06-2024
5.र	01-06-2024	>>	26-07-2024	**6.चं**	26-07-2024	>>	26-10-2024
7.मं	26-10-2024	>>	29-12-2024	**8.रा**	29-12-2024	>>	12-06-2025
9.गु	12-06-2025	>>	05-11-2025				

दशा : शनि   अपहार : बुध

1.बु	05-11-2025	>>	25-03-2026	**2.के**	25-03-2026	>>	21-05-2026
3.शु	21-05-2026	>>	01-11-2026	**4.र**	01-11-2026	>>	20-12-2026
5.चं	20-12-2026	>>	12-03-2027	**6.मं**	12-03-2027	>>	08-05-2027
7.रा	08-05-2027	>>	03-10-2027	**8.गु**	03-10-2027	>>	11-02-2028
9.श	11-02-2028	>>	15-07-2028				

दशा : शनि   अपहार : केतु

1.के	15-07-2028	>>	08-08-2028	**2.शु**	08-08-2028	>>	15-10-2028
3.र	15-10-2028	>>	04-11-2028	**4.चं**	04-11-2028	>>	08-12-2028
5.मं	08-12-2028	>>	31-12-2028	**6.रा**	31-12-2028	>>	02-03-2029
7.गु	02-03-2029	>>	25-04-2029	**8.श**	25-04-2029	>>	28-06-2029
9.बु	28-06-2029	>>	24-08-2029				

दशा : शनि   अपहार : शुक्र

1.शु	24-08-2029	>>	05-03-2030	**2.र**	05-03-2030	>>	02-05-2030
3.चं	02-05-2030	>>	06-08-2030	**4.मं**	06-08-2030	>>	13-10-2030
5.रा	13-10-2030	>>	04-04-2031	**6.गु**	04-04-2031	>>	05-09-2031
7.श	05-09-2031	>>	07-03-2032	**8.बु**	07-03-2032	>>	17-08-2032
9.के	17-08-2032	>>	24-10-2032				

दशा : शनि   अपहार : रवि

1.र	24-10-2032	>>	10-11-2032	**2.चं**	10-11-2032	>>	09-12-2032
3.मं	09-12-2032	>>	29-12-2032	**4.रा**	29-12-2032	>>	19-02-2033
5.गु	19-02-2033	>>	07-04-2033	**6.श**	07-04-2033	>>	01-06-2033
7.बु	01-06-2033	>>	20-07-2033	**8.के**	20-07-2033	>>	09-08-2033
9.शु	09-08-2033	>>	06-10-2033				

दशा : शनि   अपहार : चन्द्र

1.चं	06-10-2033	>>	23-11-2033	**2.मं**	23-11-2033	>>	27-12-2033
3.रा	27-12-2033	>>	24-03-2034	**4.गु**	24-03-2034	>>	09-06-2034
5.श	09-06-2034	>>	08-09-2034	**6.बु**	08-09-2034	>>	29-11-2034
7.के	29-11-2034	>>	02-01-2035	**8.शु**	02-01-2035	>>	08-04-2035
9.र	08-04-2035	>>	07-05-2035				

दशा : शनि   अपहार : मंगल

1.मं	07-05-2035 >> 31-05-2035			**2.रा**	31-05-2035 >> 31-07-2035		
3.गु	31-07-2035 >> 23-09-2035			**4.श**	23-09-2035 >> 26-11-2035		
5.बु	26-11-2035 >> 22-01-2036			**6.के**	22-01-2036 >> 15-02-2036		
7.शु	15-02-2036 >> 22-04-2036			**8.र**	22-04-2036 >> 12-05-2036		
9.चं	12-05-2036 >> 15-06-2036						

दशा : शनि   अपहार : राहु

1.रा	15-06-2036 >> 18-11-2036	**2.गु**	18-11-2036 >> 06-04-2037
3.श	06-04-2037 >> 18-09-2037	**4.बु**	18-09-2037 >> 12-02-2038
5.के	12-02-2038 >> 14-04-2038	**6.शु**	14-04-2038 >> 04-10-2038
7.र	04-10-2038 >> 26-11-2038	**8.चं**	26-11-2038 >> 20-02-2039
9.मं	20-02-2039 >> 22-04-2039		

दशा : शनि   अपहार : गुरु

1.गु	22-04-2039 >> 23-08-2039	**2.श**	23-08-2039 >> 17-01-2040
3.बु	17-01-2040 >> 27-05-2040	**4.के**	27-05-2040 >> 20-07-2040
5.शु	20-07-2040 >> 21-12-2040	**6.र**	21-12-2040 >> 05-02-2041
7.चं	05-02-2041 >> 24-04-2041	**8.मं**	24-04-2041 >> 17-06-2041
9.रा	17-06-2041 >> 02-11-2041		

गृहों के स्थिती का संशोधन

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: चन्द्र
दूसरा	,,	(पनप्र)	: रवि
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: बुध
चौथा	,,	(केन्द्र)	: शुक्र
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: मंगल
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: गुरु
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: शनि
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: शनि
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: गुरु
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: मंगल
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: शुक्र
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: बुध

गृहों का योग

चन्द्र	प्रभावित होता है	मंगल
रवि	प्रभावित होता है	शुक्र
शुक्र	प्रभावित होता है	रवि
मंगल	प्रभावित होता है	चन्द्र

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित गुरु
मंगल	अपेक्षित गुरु
गुरु	अपेक्षित चन्द्र,रवि,शुक्र,मंगल,राहु
शनि	अपेक्षित बुध,लग्न

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित दूसरा
रवि	अपेक्षित चौथा
बुध	अपेक्षित तिसरा
शुक्र	अपेक्षित चौथा
मंगल	अपेक्षित दूसरा,तिसरा,अग्यारवाँ
गुरु	अपेक्षित छठ्ठा,आठवाँ,दशावाँ
शनि	अपेक्षित प्रथम,चौथा,नवमा

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंद्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैं.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को

पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र, पक्षबल रहित है और वह अमंगल कारी प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

लेकिन आपकी कुडली में बुध अशुभ गृहों से संगति नहि करता

चन्द्र	-	अशुभकर्ता
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	शुभदाई
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।
कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व		स्वभाव
चन्द्र	1		शुभदाई
रवि	2		निश्पक्षीय
बुध	3	12	अशुभकर्ता
शुक्र	4	11	अशुभकर्ता
मंगल	5	10	शुभदाई
गुरु	6	9	शुभदाई
शनि	7	8	निश्पक्षीय

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	बन्धु	...	बन्धु	शत्रु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
बु	बन्धु	बन्धु	...	बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
शु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	शत्रु	बन्धु
मं	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	बन्धु
गु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु
श	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	अति बन्धु	अति बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	अति बन्धु	...	बन्धु	अति शत्रु	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष
बु	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	अति बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
शु	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति बन्धु	...	बन्धु	शत्रु	अति बन्धु
मं	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	बन्धु	...	निश्पक्ष	बन्धु
गु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति शत्रु	निश्पक्ष	...	शत्रु
श	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति बन्धु	अति बन्धु	निश्पक्ष	शत्रु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से — अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
बुध	.	.	.	.	.	5.75	.
शुक्र	.	.	.	.	.	19.94	3.45
गुरु	56.70	28.70 30.00	42.12	35.03	50.65	.	26.09
शुभ बल	56.70	58.70	42.12	35.03	50.65	25.69	29.54
अशुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	-19.24	-3.70	-10.80	.	-59.17	.
रवि	-2.12	.	.	.	.	-31.30	-9.77
मंगल	.	-6.94	.	-0.62	.	-22.59	.
शनि	.	-34.54 -45.00	-11.35	-21.90 -45.00	-2.83	-51.52	.
अशुभ शक्ती	-2.12	-105.72	-15.05	-78.32	-2.83	-164.58	-9.77
दृष्टी पींड	54.58	-47.02	27.07	-43.29	47.82	-138.89	19.77
द्रिक बल	13.65	-11.75	6.77	-10.82	11.96	-34.72	4.94

षड्बल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल							
	32.08	58.84	0.55	58.72	49.47	48.03	28.69
सप्तवर्गज बल							
	90.00	157.50	86.25	91.88	97.50	114.38	123.75
ओजयुग्मरस्यांश बल							
	0	30.00	0	0	30.00	15.00	15.00
केन्द्र बल							
	30.00	60.00	15.00	60.00	30.00	30.00	60.00
द्रिखान बल							
	0	0	15.00	0	0	0	0
संयुक्तस्थान बल							
	152.08	306.34	116.80	210.60	206.97	207.41	227.44
संयुक्त दिगबल							
	19.19	57.78	23.52	1.99	47.60	48.40	54.05
नतोन्नत बल							
	2.17	57.83	60.00	57.83	2.17	57.83	2.17
पक्षबल							
	77.18	38.59	21.41	21.41	38.59	21.41	38.59
त्रिभाग बल							
	0	60.00	0	0	0	60.00	0
अब्द बल							
	0	15.00	0	0	0	0	0
मास बल							
	30.00	0	0	0	0	0	0
वर बल							
	45.00	0	0	0	0	0	0
होल बल							
	0	0	0	60.00	0	0	0
आयान बल							
	43.22	95.30	35.23	42.09	26.66	42.44	49.75
युध्ध बल							
	0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल							
	197.57	266.72	116.64	181.33	67.42	181.68	90.51
संयुक्त चेष्टाबल							
	0	0	34.10	6.40	18.91	41.01	26.60
संयुक्त नैसर्गीक बल							
	51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल							
	13.65	-11.75	6.77	-10.82	11.96	-34.72	4.94
संपूर्ण षड्बल							
	433.92	679.09	323.53	432.35	370.00	478.06	412.11

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल							
	433.92	679.09	323.53	432.35	370.00	478.06	412.11
संपूर्ण शडबल (रूप)							
	7.23	11.32	5.39	7.21	6.17	7.97	6.87
मौलीक ज़रूरतें							
	6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात							
	1.21	2.26	0.77	1.31	1.23	1.23	1.37
संबन्धी स्थानक							
	6	1	7	3	4	5	2

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	26.21	49.96	4.33	19.39	30.59	44.38	27.63
कष्टफल	32.82	4.52	39.24	8.28	20.80	15.08	32.34

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
0.79	13.54	11.59	7.81	4.09	0.37	.	.	.	3.45	10.58	7.87
बुध											
35.28	10.32	39.85	49.92	35.04	20.16	5.28	.	.	.	9.96	34.68
शुक्र											
10.59	6.13	2.87	14.25	10.53	6.81	3.09	.	.	.	0.72	5.12
गुरु											
.	.	.	12.96	40.68	32.28	4.80 30.00	50.87	47.16	32.04	17.16 30.00	2.28

शुभ बल

46.66	29.99	54.31	84.94	90.34	59.62	43.17	50.87	47.16	35.49	68.42	49.95

अशुभ दृष्टी

रवि	-9.40	-8.40	-1.73	-11.66	-12.12	-8.40	-4.68	-0.90	.	.	.	-2.86
मंगल	-5.88	-3.37	-14.13	-10.35 -3.75	-6.63	-2.91	.	.	.	-0.90	-5.49	-10.41 -3.75
शनि	-6.08	-13.45	-9.67	-5.89	-2.17 -11.25	.	.	.	-1.58	-6.97 -11.25	-9.67	-4.40

अशुभ शक्ती

-21.36	-25.22	-25.53	-31.65	-32.17	-11.31	-4.68	-0.90	-1.58	-19.12	-15.16	-21.42

दृष्टी पींड / द्रिक बल

25.30	4.77	28.78	53.29	58.17	48.31	38.49	49.97	45.58	16.37	53.26	28.53

भावबल की यादी

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल	433.92	679.09	323.53	432.35	370.00	478.06	412.11	412.11	478.06	370.00	432.35	323.53
भावद्रिगबल	30.00	20.00	40.00	30.00	40.00	10.00	30.00	10.00	10.00	60.00	50.00	50.00
भावद्रिष्टीबल	25.30	4.77	28.78	53.29	58.17	48.31	38.49	49.97	45.58	16.37	53.26	28.53
संपूर्ण भावबल	489.22	703.86	392.31	515.64	468.17	536.37	480.60	472.08	533.64	446.37	535.61	402.06
भावबल के रुप	8.15	11.73	6.54	8.59	7.80	8.94	8.01	7.87	8.89	7.44	8.93	6.70
संबन्धी स्थानक	6	1	12	5	9	2	7	8	4	10	3	11

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढय स्थिती प्राप्त करता है। मौढय दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	श्रेष्ट समय				युवावस्था
बु	क्षीण परिस्थिती				युवावस्था
शु					बालावस्था
मं					मित्रवस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था
श					कुमारावस्था

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

ससमहायोग

लक्षण:
जन्मकुंडली में शनि स्वगृह में उच्चस्थान पर।

शश योग के कारण आप या आपके पति या माँ-बाप, पुलिस, सेना या कानूनी विभाग से संबन्धित हो सकते हैं। आप अपना हर कार्य राजकीय पद्धति से करनेवाली हैं। आप के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को आश्रय प्राप्त होगा। अनेक लोग आप के सहारे से आगे बढ़ पायेंगे। नीच बुद्धि के लोग आप की कीर्ति को कलंकित करने का प्रयत्न कर सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों से सतर्क रहना ही बुद्धिमानी होगी। यद्यपि वे सफल नहीं होंगे।

नीचभंगराज योग

लक्षण:
बुध क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल भाव का अधिपति चन्द्र केन्द्र में है ।
दुर्बल राशी में जो गृह आनन्द पूर्ण है, लग्न केन्द्र में उपस्थित है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राज योग

लक्षण:
प्रथम और पंचम भाव के अधिपति एक दूसरे के दृष्टि में है ।

प्रथम और दशावाँ भाव के अधिपति एक दूसरे के दृष्टि में है ।

इस जन्मकुण्डली में अत्यधिक शक्तिशाली राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

सुनभयोग

लक्षण:
सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि की स्थिति से सुनभा योग बनता है। यह ग्रह अकेले हो या अन्य ग्रहों के साथ हो। सुनभा योग में जन्म लेने से यह साफ़ बताया जा सकता है कि आप बड़ी बुद्धिशाली एवं प्रसिद्ध महिला बनेंगी। आप विदुषी महिला हैं। आपके पास धन की कमी नहीं होगी। संगीत तथा अन्य कलाओं में अभिरुचि जागृत होगी। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। जीवन में स्वप्रयत्न के माध्यम से प्रगति प्राप्त करने का प्रयास चालू रहेगा। अन्य लोगों के बातचीत करने के ढंग को देखकर उनके मनोभाव को जानने में प्रवीण हैं।

अनभयोग

लक्षण:
सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न से बारहवीं राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि अकेले या एक साथ स्थित रहने पर अनभा योग बनता है। अनभा योग लड़की और उसके पति को श्रीमंत और सुखी बनाता है। भौतिक संपत्तियों से तथा लौकिक प्रतिष्ठाओं के साथ आपका चरित्र सुशोभित रहेगा। आपको अच्छे कपड़े, आभूषण और नये परिधान अच्छे लगते हैं। अपनी दानशीलता तथा दयाशीलता से आप एक कुशल गृहिणी कहलायेंगी। धनी होते हुए भी आप व्यवहार में अहंकार और चंचल स्वभाव से मुक्त रहेंगी। स्वभाव में विनयभाव प्रकट हो उठेगा। योग्य शारीरिक सौन्दर्य, शाँत गंभीर मुखमुद्रा इन योगवालों के लक्षण हैं। आपका करुणापूर्ण व्यवहार और विनय आप को कीर्ति प्रदान करेगा।

दूरदूरयोग

लक्षण:
अनभ और सुनभ दोनो योग प्राप्य हैं।

जन्म पत्रिका में जब सुनभा और अनभा योगों की जोड़ी बनती हैं तब उसे दुरुधरा योग कहा जाता हैं। यह योग आपकी कुंडली में बना है। इसके अनुसार आप धनी महिला बनी रहेगी। इसका फल लड़कपन में पिता को और शादी के बाद पति को प्राप्त होगा। धन का अभाव आपको कभी न होगा। इतनी सुविधा होते हुए भी आप अहंकार
और अक्कड़पन से मुक्त रहेंगे। विनयपूर्ण एवं प्रेमपूर्ण स्वभाव से श्रेष्ठ गृहिणी का पद सुशोभित होगा। आपको सभी सुखसुविधाएँ प्राप्त होगी। आप संपन्नता की प्रतिमूर्ति हैं। आप को वाहन योग प्राप्त हैं।

गज़केसरी योग

लक्षण:
चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

गजकेसरी योग गुरु और चन्द्र के परस्पर केन्द्रस्थ होने से बनता है। आप का जन्म इस योग में होने से ज्योतिशास्त्र के आधार पर ऐसा माना जाता हैं कि आपका जन्म जिस परिवार में हुआ वह सौभाग्य से भरा रहेगा। आप जहां कहीं भी रहेंगी वहाँ धन, संपत्ति तथा विजय

ज़रूर प्राप्त होगी। यही नहीं केसरीयोग की ऐसी विशेषता होती हैं कि इस योग में पैदा होने वाली लड़की अपने पति के केमद्रुम आदि योगों का दोष दूर कर देती है। सामान्य रूप में आप दीर्घायु रहेगी और आपका जीवन सफल रहेगा। दूसरी औरतों की अपेक्षा आप विपरीत परिस्थिति में भी बुद्धि और चिंतन के माध्यम से समस्याओं का निराकरण कर पायेंगी।

अमलयोग

लक्षण:
लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आपका जन्म अमला योग में होने से आप और आप के पति संपत्ति और कीर्ति उपार्जन कर पायेंगे। आप के विरुद्ध मनोभाव और कल्याणकारी कार्यों को जन समूह आसानी से समझ पायेंगे। आप बड़ी अमीर बन जाएँगी। हृदय की निर्मलता से आप को समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त होगा। इस कारण मान्यता भी प्राप्त होगी। आपका सारा जीवन सुखपूर्ण और ऐश्वर्यमय रहेगा।

सशीमंगलयोग

लक्षण:
चन्द्र और मंगल एक ही स्थान पर रहे हैं।

आपकी जन्मपत्रिका में कुज (मंगल) और चन्द्र एक ही राशि में होने से आपको इस योग की प्राप्ति हुई है। शशिमंगल योग के अनुग्रह से आप का जीवन आनन्दमय रहेगा। जन्म की तिथि से यानी बालावस्था से धन की कमी का अनुभव आपको नहीं होगा। आपकी आवश्यकतायें जल्दी ही पिता या पति से पूरी की जायेगी। आपकी जन्मपत्रिका के आधार पर, आपकी आवश्यकता के अनुसार आपके माँ-बाप या पति के हाथ में रुपये का प्रवाह ही हो जाता है। कहीं न कहीं से आपकी आवश्यकता फलीभूत होती रहेगी। धन की देवी कभी भी आपको छोड़कर नहीं जायेगी।

मात्रुमूलधन योग

लक्षण:
दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामीत्व के सहयोग में रहा है।

आपको मात्रकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

द्विगृह योग

लक्षण:
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
चन्द्र,मंगल , आठवाँ भाव में है ।

बड़ो की राय को अनादर करने का प्रवृत्ति होगा । रक्त सम्बधित बीमारियों के लिए सही समय पर वैध्य चिकित्सा लेना चाहिए । सम्पत्ति और धैर्य सही समय पर आपका साथ देगा । दूसरों की ध्यान देने और समझने की प्रकृति से आपको साथ काम करने वाले और रिशतेदारो का अभिनन्दन और प्यार प्राप्त होगा ।

द्विगृह योग

लक्षण:
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि,शुक्र , दशावाँ भाव में है ।

प्रायोगिक परिस्थितियों में आप बुद्धि पूर्वक होकर काम करना जानते है नौतिकत्व मूल्यों और व्यवहारों पर ध्यान देना चाहिए । दूसरों की सहायता किए बिना अपने बुद्धि और शक्ति से धन कमाना चाहिए ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है ।

आपके लग्न स्थान में कर्क राशि है। पित्त के प्रकोप से स्वास्थ्य विषय में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कोई भी चीज़ जब भी किसी से पायेंगे तो पूरी सावधानी से उपयोग करने वाले स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप प्रतिभा शाली व्यक्ति हैं। बुद्धिपूर्ण कार्यों में सरलता से सफलता प्राप्त होना संभव होगा। मिष्ठान्न अधिक प्रिय होगा। साधु-महात्माओं पर श्रद्धा होगी। सज्जन व्यक्तियों के साथ संबन्ध स्थापित करना पसंद करते हैं। तामसी व्यक्तियों से आपको संपत्ति प्राप्त होगी। आपकी उन्नति में पिताश्री का महत्वपूर्ण सहयोग होगा। स्वपुरुषार्थ और प्रयत्न के माध्यम से संपत्ति का उपार्जन होगा। प्राप्त हुआ धन अन्य लोगों की भलाई के कार्य में उपयोग किया जाएगा। रक्षाविषयक विद्या में प्रवीणता प्राप्त हो सकती है। कोई आयुध धारण करने की मन में इच्छा छिपी पड़ी है। स्वभाव में आप श्रेष्ठ हैं फिर भी पूर्णिमा के सुन्दर चांद में लगे हुए काले धब्बों जैसा क्रोध आप में छिपा पड़ा है। आपके मित्रों को आपके माध्यम से अनेक लाभ होनेवाले हैं। स्पष्ट वादिता, पारिवारिक संस्कारों की रक्षा, लोक प्रियता और शिक्षा से लगाव इत्यादि बातें भी आपमें पूरी तरह प्रकट होगी। राजनीति में सफलता प्राप्त होगी।

सातवें स्थान में मकर राशि के होने से जीवन साथी में छोटे-मोटे दुर्गण होने की संभावनायें दिखाई देती है। अहँकार, अधमत्व, अत्याग्रह और क्रूरता जैसे दोष जीवन साथी में दिखाई देने की संभावना है। जीवन साथी योग्य, बुद्धिमान और व्यवहार कुशल होगा। पति-पत्नी या पत्नी पति की ऊँचाई में पर्याप्त अन्तर हो सकता है। वायु व उदर विकार से सतर्क रहना हितकर होगा।

आठवें स्थान पर कुंभराशि होने के कारण, आग (अग्नी) से सावधान रहना अनिवार्य है। शारीरिक विकार होते ही तुरन्त उसका इलाज करवाना आपके लिए लाभदायी होगा। वायुदोष, और संधिवात के कारण होनेवाली स्वास्थ्य की कठिनाइयों से बचने के लिए योग्य डाक्टरी सलाह प्राप्त करना लाभदायी होगा। स्वनिवास स्थान से दूरी पर रहने के अनेक संजोग उत्पन्न हो सकते हैं। हो सके तो उनको टाल देना ही योग्य होगा। स्वगृह ही स्वर्गतुल्य माना जाना चाहिए। जो बात या कार्य दूसरों को कठिन लगती हो वह आपके लिए सरल और साधारण होगी। किसी से वस्तुओं का स्वीकार करना या संग्रह करने की आदत से बचते रहना चाहिए। श्रेष्ठ व्यक्तियों के माध्यम से उन्नति प्राप्त हो सकती है। संगीत, रंगमंच और पशुपालन का कार्य आपके लिए आशीर्वाद बन सकता है। लेखन कार्य में भी अभिरुचि हो सकती है। अंधविश्वास, भ्रष्टाचार और संकीर्णता के विरोध में बोलने व लिखने में गज़ब की सफलता मिलेगी। अधिकतम आयु का २२वाँ वर्ष पूर्ण होते होते कार्यारंभ का योग प्राप्त होगा।

लेन देन के कार्य में बड़ी सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले व्यक्ति हैं। कई बार आवश्यकता उत्पन्न होने पर भी रुपये खर्च करने में झिझकते हैं। इस कारण से लोग आपको कंजूस मानते हैं। रुपयों के लेन देन में बड़े चपल होते हुए भी किसी न किसी जगह फँसने की संभावना रखते हैं। संपत्ति एकत्रित करने के कार्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। धन के व्यय का भी सामना करना पड़ेगा। आपके लिए संपत्ति एकत्रित करने का एक मार्ग जो दिखाई देता है वह है व्यापार। जीवन के १७, २४,२९,३१,३९,४९ और ५२ वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

लग्नाधिपति आठवें स्थान पर हैं। शिक्षण क्षेत्र में आपकी उन्नति सुनिश्चित है। अपने स्वास्थ्य की ओर लापरवाह रहने से अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक लौकिक कार्यों के प्रति अभिरुचि जागृत होगी। जुए के प्रति लगाव उत्पन्न होगा। आपकी नैतिकता की ओर कोई आँख उठाके देखे ऐसे कार्यों से दूर रहना चाहिए। बुरे समय में कुछ संकटों का सामना करना होगा। दुर्भाग्यपूर्ण घटना जीवन में घटित हो सकती है। अनेक व्यक्तियों के दुःख और विरह वेदना बाँटने का दुर्भाग्य प्राप्त होने की संभावना है। आकस्मिक धनाढ्य बनने की कामना हानिप्रद होगी। व्यवसाय और प्रेम संबन्ध में बडा जोखिम न लेना ही बुद्धिमानी होगी।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से आप एक विद्यासंपन्न व्यक्ति होंगे। समाज के बीच मान्यता प्राप्त होगी। स्वयं ही उल्लासित बनने युक्त अनेक विनोद युक्त कार्य करने का योग है। संपूर्ण संतोष प्राप्ति ही जीवन का ध्येय बनेगा। 'कामी मानी च पण्डितः बहुदार धनैर्युक्तः सुतहीनोडपि' कामी, अभिमानी, विद्वान, बहुदार या द्विभार्यवाले धनवान पर अल्प पुत्रवाले होना संभव है।

गुरु दूसरे स्थान पर रहने से आर्थिक दबाव से संपूर्णतया मुक्त रहनेवाले हैं। आप ज्ञानी पुरुष हैं। अन्य लोगों को मदद करने के अभिलाषी हैं। नए-नए पकवान खाने में अभिरुचि रखनेवाले हैं। वाणी प्रामाणिक होगी।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

ऐसा देखा जाता है कि शुक्र गृह दूसरे देव से संयोग है । आपको साहित्य कला और लेखाचित्र कला में दिलचस्पी होगा । आप द्वारा किए गए कार्यों में भावुकता और उत्तेजन होगा ।

क्योंकि दूसरा देव और चौथा देव संयोग में है, आप मातृत्व सम्बंधो से धन और सम्पति पा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्घि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से, इच्छानुसार पिता के माध्यम से सुख और संतुष्टि प्राप्त होगी। विवाह के बाद भाग्योदय की संभावना रखते हैं। संतान प्राप्ति का सौभाग्य उपलब्ध होगा। मानसिक तनाव से मुक्त होने के प्रयास में असफल होने की संभावना है। स्त्रियों के माध्यम सफलता प्राप्त करना सरल होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में थोड़ी न्यूनता आने की संभावना है।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दसवें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ लोगों से और श्रेष्ठ स्थानों से अनेक प्रकार का समर्थन प्राप्त होगी । आप रासायनिक शास्त्र में अभिरुचि रखनेवाली महिला हैं। आप पंचेन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख सकेगी। यह स्वर्ण के साथ सुगंध के मिश्रण जैसी बात होगी। आप आत्मसंयमी महिला हैं। इस कारण सदा आत्म संतोष की अनुभोक्ता हैं। स्त्री में जब आत्मसंयम और आत्मसंतोष एक साथ प्रकट हों तो दिव्यता उसके साथ रहती है। स्वपुरुषार्थ से अर्थात परिश्रम से आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि हो सकती है।

चौथे स्थान का स्वामी शुक्र है। मन की गहराई में छिपी हुई कलापूर्ण रचनात्मकता, सौहार्दमय व्यवहार और तत्वचिंतन प्रकट होने की संभावना है। संगीत के प्रति अनुराग उत्पन्न होगी । शैक्षिक जागरूकता और अनुशासन आप जैसी नारी को साथ और सहयोग देगा। अन्य सहयोगियों के बीच श्रेष्ठ नारी के नाम से जानी जायेंगी। आप स्त्री होते हुए भी तर्क शास्त्र में अति निपुण हैं। आपको तर्क के माध्यम से

जीतना कठिन है। यश-कीर्ति और जन समर्थन सरलता से सुलभ होगी ।

भावाधिपति, बृहस्पति का स्थान अनुकूल रहने से अशुभ ग्रहों के कुप्रभाव में क्षीणता का अनुभव होगा। अन्य चतुर्थ भाव से संबन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

बच्चे, मन, बुद्दि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्दि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से बच्चों के कारण अथवा स्वास्थ्य के कारण समस्या खड़ी होगी। वायु विकार अथवा श्वासरोग से सदा बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। संतान सुख प्राप्त होगा। मानसिक उद्‌वेग की संभावना है। इस कारण कुछ अंश तक आप का स्वभाव क्रोधी होगा।

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

राहु छठ्ठे स्थान पर रहा है। वह संपत्ति का मालिक है। दीर्घ आयु का जीवन प्राप्त है। चर्मरोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त डाक्टरी इलाज करना बुद्धिगम्य माना जायेगा। प्रणय संबन्ध से दूर रहना अच्छा होगा। क्योंकि उसमें संतोष कम और दुःख ज़्यादा प्राप्त होगा।

छठ्ठा भावाधिपति दूसरे स्थान पर रहने से आप पराक्रमशील हैं और कीर्ति के मालिक हैं। परदेश गमन की संभावना रखते हैं। आप मधुरभाषी हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना है। आप सेहत से सशक्त और निरोगी रहेंगे।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुण दोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर है। आप के कुलीन और शालीनतापूर्ण स्वभाव से हर व्यक्ति आकर्षित होगा। धार्मिक मनोभाव और जीवन की कलात्मक निपुणता जीवन में शोभा वृद्धि करेगी। व्यक्तित्व में आकर्षण होगा। ऐसे सभी संबन्धों से दूर रहना चाहिए जो आपके लिए चर्चा का विषय बन जाये। आप का दांपत्य जीवन सुखमय होगा। आप की मातृभाव संतुष्ठ रहगो। आप के पति परिश्रमशील और कार्यकुशल होंगे। राजकीय या कलात्मक व्यवसाय में आपके पति की अभिरुचि रहेगी। प्रेरणा और नैतिक शक्ति आप से उनको मिलता रहेगा। परिवारिक क्षेत्र में छोटी-मोटी उन्नति और सफलता प्राप्त होगी। अनेक श्रेष्ठ और उच्च पद प्राप्ति की संभावनायें हैं। आप के पति अचानक उन्नति करनेवाले व्यक्ति होंगे।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवनसाथी प्राप्त होने की संभावना दिखाई देती है।

आपके पति लंबे कद और गौवर्णी बदन के व्यक्ति होंगे। वह सुन्दर और सबके आकर्षण का केन्द्र होंगे।

शनि आपकी सातवीं राशि में हैं। विवाह में देरी होने की संभावना है। आप ईश्वर पर भरोसा रखकर तीर्थस्थान की यात्रा करेगी। आपको एक योग्य पति प्राप्त होगी। आप अपने पति के रूप सौन्दर्य, स्वभाव और व्यक्तित्व पर चर्चा करने में असमर्थ हैं। आपका विवाह एक अविचारित परिस्थिति में होने की संभावना है। आप के पति आयु में आपसे बड़े या कद से बड़े या सांवले होंगे। आपको अपने जन्म स्थान से दूर रहने का अवसर प्राप्त होगी। सिर संबन्धी रोग या कोई चोट लगने पर सचेत रहना आवश्यक है। बीमारी के चिन्ह प्रकट होते ही उसका उपचार विलंब रहित करना लाभदायक रहेगा।

सूर्य गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपके पति आत्मीयभाव के और परिपूर्ण मानसिक परिपक्वतावाले श्रेष्ठ पुरुष होंगे। आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा और इस कारण आपको भाग्यशाली माना जा सकता है।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद होगी। यह निश्चित है।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पति और आपके बीच बार-बार मनःदुख होने की संभावना है। छोटे झगड़े महास्वरूप न ले पायें इसकी आपको सावधानी रखनी होगी। परंपरा का त्याग शीघ्रता में न करना ही लाभप्रद होगा।

सातवाँ स्थान अशुभ स्थिति से प्रभावित हुआ है। इस कारण जो श्रेष्ठ फल प्राप्त होनेवाले हैं उसमें रुकावट उत्पन्न होगी। अनेक लाभ हाथ से छूट जाने की संभावना हैं। विवाह कार्य में विलंब उत्पन्न होगा। कुछ विघ्न सहने होंगे।

शुक्र पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से अन्य दोषयुक्त फल क्षीण होंगे। यथार्थ लाभ प्रत्यक्ष होंगे।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी से सुमेल और सहयोग स्थापित करने में ज़्यादा प्रयत्नशील रहना होगा। अपने कार्यक्षेत्र में भी अनेक मुश्किलों का सामना करना होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना लाभदायक होगा। भक्तिपूर्ण कार्यों में अभिरुचि रहेगी। लेकिन वह गुप्त रहेगी। आप अपने मनोभाव जल्दी से अभिव्यक्त नहीं करते। अन्य की संपत्ति आपको प्राप्त होगी।

चन्द्र आठवें स्थान पर रहा है। स्वयं उपार्जित धन का व्यय होगा फिर भी जीवनसाथी के माध्यम से धन उपार्जन होने की संभावना है। आँखों की बीमारी से बचने के लिए डाक्टरी सलाह आपके लिए अनिवार्य है। जलाशय से बचते रहना आवश्यक है। दमा से बचने की सावधानी रखना योग्य होगा।

मंगल (कुज) आठवें स्थान पर रहा है। आपका पत्नी के साथ का व्यवहार रूष्ट होगा। कार्य की सफलता को प्राप्त करने के लिए कोई अयोग्य मार्ग भी स्वीकारने में आप तत्परता दिखायेंगे। जीवनकाल में शल्यक्रिया करवानी होगी। आप निरपराधी होते हुए भी आक्षेपित होने की संभावना रखते हैं। अपरिचित व्यक्ति के साथ यौन संबन्ध विकार कारक हो सकता है।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति दूसरे स्थान पर है। आपके पिता स्वाधीन और शक्तिशाली व्यक्ति होंगे। आप एक श्रेष्ठ धनी पिता की पुत्री हैं। आप जैसी महिला के लिए यह एक देवीय अनुग्रह माना जा सकता है।

आपके नौवे भाव में बुध उपस्थित हैं। इसलिए आपको ऊँची शिक्षा प्राप्त होने का भाग्य प्राप्त है। विद्या, धन, संतान और नौकर चाकरों का सुख सदा प्राप्त होगा। परोपकारी कार्य संपन्न होंगे। दानवीर के नाम से ख्याति मिलना संभव होगा।

नवमा भावाधिपति पापयुक्त संजोगों से चारों ओर से ढका गया है। अन्य गृहों के सान्निध्य से अनुकूल स्थिति के बदले प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होगी। फिर भी आंशिक सुख की अनुभूति हो सकता है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को आठवे भाव में स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों के अनुसार आपको अपने पसंन्द की उधोग पाने में परेशानी होगी । उधोग के क्षेत्र में आपको अनेक मुसीबतों की सामना करनी पड़ेगी । आप एक अच्छे जीविका की प्रतीक्षा कर सकती है । आपको दूसरों के बारे में बुराई करने से सावधान रहना चाहिए ।

दसवी भाव मेंष राशी है । यह एक तेजस्वी राशी है । यह ऐसे उघोगों को सूचित करता है जहाँ आग, लोहा, और अनेक धातु का प्रयोग किया गया है । यह मंगल का राशी है । यन्त्रविध्या, रसायनवेत्ता, धडीसाज़ और इस तरह का उघोग भी इसी राशी के नियंत्रण में है । आप महत्वाकाँक्षी, कर्मशील, आवेगशील और धैर्यशील होगी । आपके लिए सूचित किए गए उघोग है पुलिस, फौजी सेवा, गलनांक और ढलाई उघोग, होटल, सर्जरी और रसायन उघोग ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य दसवी भाव में उपस्थित है ।
सारावाली के अनुसार सूर्य दसवी भाव में उपस्थित है । आप बुद्विशलि होगी, सुख भोगों का अनुभव करेगी और वाहन को आपनाएगी । आप शक्तिशील, धनिक और धैर्यशाली होगी । आप अपने पुत्र और रिश्तेदारो से खुश रहेगी । यह निश्चय है कि आप जीवन में आगे बढ़कर एक आदरणीय और महत्वपूर्ण पद को संभालेगी । आप अपने पिताजी से लाभ पा सकती है । आपको विविध विषयों पर दिलतस्पी होगी ।

क्योंकि दसवी भाव मेष राशी आप जो भी काम करे उसमें कार्यक्षमता दिखाएगी । आप मुसीबतों से लड़कर रुकावटों पर विजय प्राप्त कर सकती है । आप मेहनती होगी । एक व्यापार जो नष्ट कष्ट में जा रही है, आपके मेहनत और निरीक्षण में लाभदायक बना सकती है ।

आपके जन्मकुण्डली में शुक्र गृह दसवी भाव में उपस्थित है ।
क्योंकि शुक्र दसवी भाव में उपस्थित है आप भाग्यशाली होगी । आपको स्वच्छ स्वभाव और व्यवहार होगी । आप नहाने, प्रार्थना करने और ध्यान में स्थिर रहेगी । आपको अपने जीवन साथी और बच्चों से अतीव स्नेह प्राप्त होगी । आप किसी सांस्कारिक या कलात्मक संस्था की कर्मचारी बनेगी । आपकी जीविक भी इसी तरह की कर्यों से सम्बधित होगी । आप कला और संस्कार की वाणिज्य में तत्पर होगी और आप पर्यटन विभाग में काम करेगी या प्राचीन कला से सम्बधित होगी । आप ऐसी चीजों को निर्यात भी कर सकती है । शुक्र एक स्त्री गृह बै । यह सूचित करता है कि आप एक स्त्री शाक्ति से सम्बधित होगी । अमूल्य रत्नो, गहने और वाहनो को शुक्र नियंत्रित करती है । आप इन चीजों से सम्बधित क्षेत्रों में सफल हो सकती है । शुक्र नियम और न्यायाधीरा से मिली जुली है । आप कर कर्मचारी भी बन सकती है ।

शुक्र मेष राशी में है । आप अपने उधोग मे दूसरो का अधिक नियंत्रण पसन्द नहीं करती । आपको सिर्फ प्रातमिक मधे ही देना चाहिए आप अपने आप काम करना चाहती है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

वैज्ञानिक, तन्त्रविधा (गूढता), वायु मार्ग से यात्रा, ज्योतिष, अस्पताल में सहायक, जन गणना, शेयर- बाजार, जेल विभाग, हस्तलेखों का भाषान्तर करना, रसायनशाला, चमशोधनालय, ठगना चलमुद्रा ।

दसवी भाव में उपस्थित गृहों के संयोग से कुछ निर्दशों को प्राप्त कर सकते है । इन गृह का विशिष्ट मेल कुछ प्रभाव को उत्पन्न करता है ।

ब्रिहत्त चातका के वराहमीहिरा के अनुसार सूर्य और शुक्र का मेल यह सूचित करता है कि आप आयुधों पर नियंत्रण करेंगी । वस्त्रों को

रंग देने की प्रक्रिया से सम्बधित उधोगें में आप काम करेगी । निर्वाहन विभाग और स्वास्थ्य संरक्षण पुरुषों के लिए अच्छी प्रत्याशा है ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च स्थान पर खड़ा है । सफलता आपके लिए निश्चित है ।

गुरु दसवी भाव के रुप में उपस्थित है । यह आपके अच्छे परिणामों को मजबूत बनाती है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गे को सूचित करता है ।

लाभ स्थान के स्वामी के दसवें स्थान पर रहने से मानसिक विकारों को ठीक तरीके से काबू में रख पायेंगे। आप अभिनन्दन के पात्र बनेंगे और सम्मानित भी होंगे। भक्तिमय कार्यों के प्रति सम्मान की दृष्टि रखनेवाले हैं। राजपक्ष से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से निजी कार्यों में ज़्यादा अवरोध उत्पन्न होगा। बडों से आक्षेप होगा कि आप उनका ठीक तरीके से आदर नहीं करते। मित्रों से शत्रुता होगी। योग साधना और तीर्थाटन में अभिरुचि जागृत होगी।

केतु बारहवें स्थान पर रहने से चिंतन कार्य में आप चपल हैं। आप शशक्त मन और आत्मा के मालिक हैं। व्यर्थ के खर्च करने के आदी हैं।

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। कुंडली में ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा -फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों को जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में आप उत्साही महिला बनेंगी। श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की संभावनायें हैं। अन्य की अपेक्षा आप को ज़्यादा सफलता मिलती दिखाई देगी। आप जो कुँवारी हों तो विवाह का योग निकट है। इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। संतान प्राप्ति का योग भी निकट है। जीवन साथी से सुखद व्यवहार होने की संभावनायें हैं। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। घर के बड़ों या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूलभाव मिलती रहेगी। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहनी पड़ेगी। स्वजनों से वियोग व्यथा सहना होगी । ई.एन.टी डाक्टर का उपदेश लेकर उन अव्यवों का उपचार करना अच्छी होगी । कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। परिश्रमशील महिला का स्वभाव होने पर श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। गुरु दशा का आरंभकाल दोष युक्त होते हुए भी उसका अन्तिम समय सुखद और लाभदायक होगा है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

∇ (15-09-2014 >> 16-05-2017)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनानेवाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्याननिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से रुकावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

∇ (16-05-2017 >> 04-03-2018)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। समूह के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

∇ (04-03-2018 >> 04-07-2019)

बृहस्पति दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप को लौकिक सुख की अनुभूति होगी। शत्रुओं के मनोभाव में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देगा। उनसे प्रेमपूर्ण सहकार प्राप्त होगा। बहुत लोग आपकी सहायता के लिए निकट आयेंगे। आपको अपनी योग्यता दिखानेवाले प्रमाण पत्र भी प्राप्त होंगे। विवाह संबन्धी कार्यों अथवा संतान विषयक कामों में मन चाही सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (04-07-2019 >> 09-06-2020)

बृहस्पति दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको आश्चर्य जनक शक्ति एवं योग्यता प्राप्त होगी। मनोबल में भी वृद्धि होगी। शत्रुओं को जीतने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। आप प्रसिद्धि और स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। आप सुख और शाँति से दिन व्यतीत कर पायेंगे। पूर्व में किसी डाक्टर ने सर्जरी करवाने की सलाह दी होतो, इस समय में यह काम हो सकता है।

∇ (09-06-2020 >> 03-11-2022)

बृहस्पति दशा में राहु की अन्तर्दशा में अनेक विरोधी व्यक्ति क्रियाशील बनेंगे। सत्कार्य के बदले शत्रुभाव उत्पन्न होगा। मानसिक उद्वेग उत्पन्न करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। वर्तमान का निवास स्थल बदलने की इच्छा प्रकट होगी। अपने संबन्धियों का स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। इस कारण अनेक तरह की कठिनाईयों का सामना करना होगा।

शनि दशा

शनि दु:ख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में बुद्धि कुंठित होती है, अनेक प्रकार के मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और सुख दु:ख दोनों का अनुभव होता रहता है। सरकार या उच्चधिकारियों से धन मिल सकती है। अनेक सेवक और सहायक आपके चारों ओर रहेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार और सन्तानों का सुख न होने की संभावना

है। भिन्नप्रश्नों से मन चंचल रहेगी। पैरों पर कोई पीड़ा होने की संभावना है। हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार कर्म फल भोगती है। इस काल में सुख-दुख मिश्रित अनुभव होते हैं। श्रेष्ठ गृहनायिका का पद संभालने का समय है। जीवन के मध्यम काल के बाद जब शनि दशा होती हैं तो अपनी आयु से कम आयु के विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ निकट का संबंध स्थापित होने की संभावनायें रहती है। इस संबन्ध से अयोग्य व्यवहार में बढावा होने की संभावना होने से जागृत रहना लाभदायक होगी । अपनों से नीचे के लोगों के माध्यम से धन लाभ होगी।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

जन्म कुंडली में शनि के द्वारा यश योग बना है। वैभव, कीर्ति, धन और प्रसन्नता आदि की प्राप्ति सरलता से होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

∇ (03-11-2022 >> 05-11-2025)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप अपने घर में और समूह के बीच अनेक क्लेशों का अनुभव करेंगे। मानसिक और चिंतन शक्ति क्षीण होगी। इस कारण आपके दोस्त सोचेंगे कि आप में मानसिक परिवर्तन आ गया है। निवास स्थान से दूर की यात्रा संभव है। निम्न वृत्ति के लोग आप से काम कराकर लाभ उठाने की कोशिश करेंगे।

∇ (05-11-2025 >> 15-07-2028)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप का भाग्य चमक उठेगा। आप अपनी आशाओं और लक्ष्यों की पूर्ति करेंगे। आप को जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और मान्यता भी प्राप्त होगी। आप का कर्तव्यबोध प्रशंसनीय होगा। आपको अविचारित मार्ग से कोई सहायता और मार्गदर्शन मिलेगा जिससे आप आगे बढ़ सकेंगे। आपके कार्यक्षेत्र से बदली होने की संभावना है। बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल समय है। शुभ कामों के संपन्न होने की पूरी संभावना है।

∇ (15-07-2028 >> 24-08-2029)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

∇ (24-08-2029 >> 24-10-2032)

शनि की दशा में शुक्र के अपहार में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबन्ध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (24-10-2032 >> 06-10-2033)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबन्ध में बुरा प्रभाव ड़ालेगा। आप अपनी नौकरी में उदास हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

∇ (**06-10-2033 >> 07-05-2035**)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्यु तुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

∇ (**07-05-2035 >> 15-06-2036**)

शनि की दशा में मंगल के अपहार में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

∇ (**15-06-2036 >> 22-04-2039**)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में एक गहरे कुए में गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं को आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आत्मीय और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेगा।

प्रारंभ से **02-11-2041**

बुध दशा

इस दशा में आने से बड़े लोगों की सहायता आपको मिलेगी। वे लोग आपसे श्रेष्ठ बर्ताव करेंगे। ज़मीन, जानवर, चिडियां और अच्छे साथियों से आनन्द प्राप्त होगी। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगी। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण होते रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा शायद कभी हो जायेगी। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय युक्त रहेगी। साधु-संत् पुरुषों के सेवा कार्य में अति आनंद प्रदान होगी। एक गृह नायिका के स्थान को शोभा दिलानेवाले अनेक कार्य में सफलता प्राप्त
होगी। नये मकान के निर्माण की संभावना है। भूमि के संबन्धी कार्यों में जुटने से लाभ होगी।

प्रारंभ से **03-11-2058**

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण अति आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने को किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। महिलाओं में धीरजशीलता ज़्यादा होती है। इसलिए घबराइये नहीं। वाद विवाद और बदनामी का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता हैं तो धन, पारिवारिक सुख देनेवाला होता है। बालावस्था में इस दशा काल में पढ़ाई में विक्षेप का सामना करना पड़ती है। दूर देशागमन की
अनेक संभावनायें हैं। मित्रजन से अनेक समस्या पैदा होगी। सुख और शांति क्षीण होगी। धन नाश का समय है। भक्तिपूर्ण जीवन आश्वासन दिलाती है। अन्य महिलाओं के कारण अन्य लोगों से संबन्ध बिगडेंगे। मानहानि सर्वसाधारण बात बनेगी। कुछ काल बाद आनंदमय वातावरण की प्रतीक्षा कर सकती हैं।

ऊपर बताई गई बातें केतु दशा के प्रभाव का सूचना मात्र है। इससे डरना व्यर्थ होगी । पुरुषार्थ पूर्ण प्रयत्न से मन को बस में रखकर ईश्वर के प्रति निष्ठा रखना बुद्धिपूर्ण कार्य होगी । पुरुषार्थ से आत्मबल में वृद्धि होती है। यह जीवन की सफलता का एक मात्र मार्ग कहा जाता है।

प्रारंभ से **02-11-2065**

शुक्र दशा (अथवा भृगु दशा)

पहले किए हुए अच्छे कर्मों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगी। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में की जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल पायेंगी। भिन्न प्रकार की सवारियों में कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगी। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या आपको बाधा देगी। संबन्धियों से मानसिक अथवा शारीरिक तौर से अलग रहनी पड़ेगी। कभी कभी मन की अशान्ति का अनुभव होगी। विवाह की बात चलती हो तो अल्पकाल में विवाह सुनिश्चित होगी। यह दशा पति के लिए सुखमय होगी। सुखद दांपत्यजीवन और संतान प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ समय है।

जन्म कुण्डली में शुक्र के संग शत्रु ग्रहों का सहवास होने से संपूर्ण शुभ फलों से वंचित रहना पड़ेगा। परंपरा से भिन्न प्रकार की मित्रता हो सकती है। सतर्क रहें लाभदायी होगा।

मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। गुप्त रोगों का शिकार बनना पड़ जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण में क्षीणता उत्पन्न होगी। लैंगिक शक्ति दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती हुई दिखाई देगी। अपमान और धन नाश नीच मित्रों के माध्यम से हो सकता है। इस कारण सावधानी से हर कदम उठाना बुद्धिगम्य माना जायेगा। जहाँ से आशा की प्रतीक्षा रखेंगे वहाँ निराशा ही उपलब्ध होगी। जिन से मदद की आशा होगी वे विरुद्ध व्यवहार करेंगे। संक्षेप में सहयोग और सहानुभूति का अभाव दिखाई देगा।

ग्रह दोष और उपाय

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रृष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यो पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में आठवाँ स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेषण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण

आप हमेशा समर्पीत प्रयास सें परिवार जीवन कें सपनें पुरे कर सकते है। नियंत्रीत खर्चे आपकों स्थीर आर्थीक परिस्थीती रखनें में मदद करेगा। आप प्रयास सें सहजता सें यश प्राप्त करनें मे कम भाग्यशाली है। आशावादी रहने सें आपकों प्रेरणा मिलेगी, और आप बार-बार प्रयास करकें उसके फल का आनन्द ले सकेंगे। आपनें युद्धस्थिती और धोके कें बारे में सतर्क रहना चाहिए। साथी कें साथ अनुभव बताना और प्यारे इन्सान के साथ रहना इससे आप ताकदवर बन सकते है। हमेशा स्वास्थ्य का ध्यान रखें और डॉक्टर की सलाह लें ।

उपचार

आठवें घरकें कुज कें अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दियें उपाय कर सकते है

देवी के ८ मंदिरों में जाकर प्रत्येक मंदिर में देवताओं को ७ परिक्रमा लगाऐं। ४० बेसहारा लागों को दालयुक्त भोजन दें। सुह्ब्रमण्यममंदिर जाऐं और देवताओं के सामने हल्दी लिप्त कुंडली रखकर पुजा करें।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही।

राहु दोष कें उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहुदोष न होने सें, आपने कुछ उपाय करनें की जरूरत नही।

केतु दोष

आप अच्छी तरीके सें खर्चा करके पैसो के बारे में स्थिरता पा सकते है। पैसा कमाना और परिवार को सुख देना आपके लिए कठीन नही। विनयशील रहने सें कभी-कभी बुरा समय और नुकसान हो सकता है। आप अडचनें और ऋण पर दृढता सें जीत पा सकते है। साथी से अनुभव बाटने सें मन की शांती और कार्य अच्छे होगे। आपने बुरी संगत और परिणाम सुखी और स्वास्थ्य जीवन हेतू टालने चाहिए। आपकों आखें छोड के शरीर के उपरी भाग के विकार हो सकते है। पेट का निचा भाग और प्रोस्ट्रेट भाग की परवाह करें.

केतु दोष हेतू उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है।

सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखे। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार ९ दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में शाम में दर्शन लें । स्वेच्छा सें दान करकें परिक्रमा करें।

केतुकवचयंत्र लेकर समर्पी त भाव सें पहने।

केतु के लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान. उनकें मंदीर में दर्शन लेके स्वेच्छा सें दान करें।

घरमें सुदर्शन चक्र रखे और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतू निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः

परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने सताभिषा नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति राहु है । आप अपने रायों को धैर्यपूर्व दूसरों के सामने प्रकट करेगों । यह आपके स्थिर दोस्ती को बनाए रखने में मुसीबत पढ़ेग ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल होगा । सताभिषा नक्षत्र होने के बावजूद शनि, केतु और सूर्य दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके मानसिक दाश और कार्यो प्रत्यक्ष परिवर्तन होगा । इस समय आपके मानसिक दाश और कार्यो में प्रत्यक्ष परिवर्तन होगा । आप अपने गुणों को दूसरों के सामने प्रकट करने के लिए कोई परिश्रम नहीं करेगे । वैवाहिक जीवन को शान्त रखने के लिए अपने रुचि- अरुचि पर कुछ समझौता करना चाहिए ।

कुम्भ राशी जन्म राशी का अधिपति शनि है ।दूसरे लोगों पर उपस्थित विश्वास पर व्यक्त दृष्टिकोण होना चाहिए और अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए उत्सुक रहना चाहिए । अपना विचार और प्रवर्ति किस प्रकार दूसरों पर प्रभावित हो रहा है, इस के बारे में जानना उच्चित होगा । अशविनि, कृतिका उत्तर फालगुनी(सिंह राशी),हस्ता,और चित्रा नक्षत्र (सिंह राशी)शुभ कार्यो के लिए अनुकूल नहीं है ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

इस प्रतिकूल दाश में अयप्पा और सूर्य देव की प्रार्थना करना उचित होगा । श्रेष्ठतर परिणाम के लिए शताभिषा जन्म नक्षत्र और सम्बधित नक्षत्र जैसे स्वाती और आर्द्र नक्षत्र के दिवस पर सर्प देव की प्रार्थना करना चाहिए । अपने योग्यता के अनुसार शताभिषा नक्षत्र के दिवस पर दान देना शुभ कार्य है ।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए नक्षत्र का अधिपति राहु की प्रार्थना करना चाहिए । शनिवार को चावल डोल देना उचित है ।

शनि गृह के अधिपति को प्रसन्न करने के लिए धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करना उचित है । शनिवार के दिन चावल डोल देना चाहिए । लाल, नीला और काले रंग के वस्त्रों को पहनना शुभकारक माना जाता है ।

शताभिषा नक्षत्र का देव वरुणा है ।वरुणा को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ॐ वरुणास्यान्तम् भनमसि वरुणस्य
स्कम्भसर्जनीस्त वरुणास्या ऋत्त सदन्यासि
वरुणस्य ऋतसधनमसि वरुणास्य
ऋतसधनमासिद

२ ऊ वरुणाय नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः शताभिषा का जानवर गोड का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होगा ।शताभिषा का औधोगिक पेड,कडंभ पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी, मोर को पीड़ा नहीं देना चाहिए ।शताभिषा नक्षत्र का मूलतत्व आकाश है । अष्ठदिपालक की पूजा करना चाहिए और प्रकृति नाशक और प्रदूषण कार्यो को रोक देना चाहिए ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :शनि

आपका शनि दाश 3-11-2022 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र शताभिषा है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुणडली के गृहो के अनुसार, आपको शनि दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजराना पडेगा । अपको अप्रत्याशित रुकावटों औप मुसिबतों का सामना करना पडेगा । आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते । अनावश्यक परेशानी आपके नीद के लिए हानिकारक होगा ।

शनि दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब शनि प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब शनि कमजोर है, अक्सर जीवन में आने वाले मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करना पडेगा । आपको हमेश परिज्ञान के साथ विचारों कों व्यवस्था करने और उसे आचरण की क्षमता नहीं होगा । इसलिए वित्तसम्बधी नष्ट होगा ।

इस समय बड़ों के साथ आपका रिशत अस्वाभविक होगा । सामान्य रुप से आपके सामाजिक लेन देन में आवेश की कमी मेहसूस होगा । भोजन स्वास्थ्यकर हो, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय रोगें से मुकाबला करने की शक्ति कम हो जाएगा । आप रोगें से जल्दी विलंभ नहीं होगें । शनि के बुरे प्रभाव से आपको बहुत अधिक सहना पडेगा ।

जब शनि प्रतिकूल स्थिति में है तो आपके प्रायोगिक चिन्तन शक्ति कम हो जाएगा । आपको अनावश्यक मानसिक परेशनियों से दूर रहना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शनि प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शनि को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनि दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

नीला और काला रंग शनि गृह के लिए प्रिय है । इन रंगे के वस्त्र पहनने पर आप शनि गृह को शान्त कर सकते है । हानिकारक प्रभावें को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

जीवन रीति

शनि दाश में आपका जीवन शनि गृह के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । शनि के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए आपको एक अनुशासित जीवन जीना चाहिए । कोई भी कार्य करने से पहले अच्छी तरह सोचना चाहिए । धृष्ट साहसी और प्रतियोगिता जैसे कार्यों को छोड देना चाहिए ।
अच्छे प्रभाव जैसे समृद्वि, शान्ति और ईश्वर के अनुग्रह में शनि रुकावट उत्पन्न कर सकता है । इसलिए अच्छे कार्यों से और होशियारी की मार्ग से शनि के हानिकारक प्रभावों को निवारण करना चाहिए । ऐसे परिस्थितियों से दूर पहना चाहिए जहाँ आपको कोई बुरा कार्यों में शामिल होना चाहिए । ठड़ा पानी या भोजन लेना छोड दें । पितृ कर्म (स्वर्गीय आत्मओं औप पूर्वजो की खुशी के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान) करने से और बड़ों को आदर करना आपके लिए लाभदायक है ।

देवता भजन

शनि दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव और श्री अय्यप्प भगवान का पूजा करना चाहिए । कुछ ज्योतिषयों ने भगवान हनुमान देव को पूजा करने का राय प्रस्तुत किया है । केरल के ज्योतिषियाँ भगवान अथ्यप को पूजा करने का राय रखता है । काला या नील वस्त्र पहनकर वृत लेकर अय्यप्प भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक शनि गृह को शान्त कराने का मार्ग है ।

दान

शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनि का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए । गरीबों को भोजन दान देना उचित है । एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए । इससे अच्छा फल प्राप्त होगा ।

फूल

शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको नीला अपराजित, नीला कमल, नीला जपाकुसुम आदि को पहनना चाहिए । फूलों को अपने हाथ में लेकर नीचे दिए गए मंत्र का आलपन करने के बाद उसको पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन सूर्यपुत्रः प्रसीदतु

ऊपर दिए गए परिहारा को 2-11-2041 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :बुध

आपका बुध दाश 2-11-2041 को शुरु होता है ।

प्ङ्ठ्ह्मण बुध फराशी में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर बुध दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपका अपेक्षपाती मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

बुध दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब बुध कमज़ोर है आप अपने काम में इच्छानुसार की तृप्ति और सतोष नहीं पा सकते । शुभ उत्सव या भोज में अप्रत्याशित रुकावट आने की संभावना है ।

इस समय ततसंगत निर्णयों के लेने और निबाहेन में आपको देर लगेगा । अपने क्षेत्र में आपको सहायता आवश्यक पड़ेगा । सभ कुछ आपके इच्छा के अनुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णयों को लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

व्यक्तिगत साबधों को निर्वाह करने में आपको मुसबित लगेगा । आपका वाक्य और कर्म (कार्य) प्रतिकूल परिणामों को उत्पन्न कर सकता है । सभ कुछ आपके इच्छानुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए ।बुध को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर बुध दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

हरा रंग बुध गृह का प्रिया रंग है । इसलिए बुध गृह को शान्त कराने के लिए हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । बुधवार को और बुध गृह की पूजा करते समय हरे रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति

अपने विचार और कार्य में श्रेष्ठ सामिप्य रखने से बुध दाश के हानिकारक प्रभावों से आप बच सकते है । शिक्षा सम्बधा अनुशासन जैसे अध्ययन, लेख था विधा में शमिल होने से आप बुध को शान्त कर सकते है । अपने संवाध विधा, और नए ज्ञान को पुष्ट करने पर लाभ उठा सकते है । नए नए भावाओं को सीखने की कोशिश करे और नए ज्ञान के क्षेत्रों में प्रवेश करने की कोशिश करें । अनोके शब्दों का प्रयोग करना और पंडितों के वाक्यों की अनुसरण करना बुध दाश में आपके लिए सहायक है । पुराणों और धर्मिक पुस्तकों को प्रतिदिन पठना आपके लिए लाभदायक है ।

देवता भजन

बुध गृह को शांन्त करने के लिए श्रीराम, श्रीकृष्ण और विष्णु भग्वान के अवतारों की पूजा करना चाहिए । दोनों दाश और समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए हर बुधवार को इन देवताओं का प्रार्थना करना चाहिए । इन देवताओं के मंदिर में दर्शन करना और दान देना आप के लिए लाभदायक है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद बुध की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते
सोमजानिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाश्य

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

फूल

बुध के शान्त करने के लिए आपको तुलसी का पत्ता और भेल का फूल पहनना चाहिए ।बुध दाश के समय आप पीले रंग के फूलों को पहन सकते है । पीले फूलों जैसे कचनर,कनेर,गुलेतुरा, अमलतास और कानफूल को पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन शशिपुत्रः प्रसीदतु

ऊपर दिए गए परिहारा को 3-11-2058 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :केतु

आपका केतु दाश 3-11-2058 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र शताभिषा है । प्ड्डुद्ध्म्ण केतु भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थानो के अनुसार आपको प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पडेगा । जिस जोखिम में आप शमिल हो,जीत के लिए आप डरते रहेगों । इस समय आपके कल्पनाशील अर्न्तज्ञान सभी जगह अपूर्ण हो जएग । क्योंकि यह आपके चिन्ता एकाग्र करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ेगा, आपके समझने कि शक्ति भी कम हो जाएगा ।

केतु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब केतु कमजोर है प्रतिकूल निर्णय लेने की झुकाव होगा । अपनी आवशायकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर करना पड़ेगा । स्वंय रक्षा की आवश्यकता को आप कम मूल्य देगों ।

आप इस समय पूर्वकाल में जीना चाहते है । अपने कार्यों में एकान्त बनाए रखने की कोशिश करना चाहिए । आपका शरीरिक उष्णा अधिक हो जाएगा ।

आपको पचाने से सम्बधित रोगें का अनुभव होगा ।यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए ।

जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद उपयोग करने का झुकाव होगा । वैवहिक जीवन कायम रखने के लिए आपको संर्घष करना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें केतु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने पर आप केतु को शांन्त कर सकते है । आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते है । मंगलवार में आपको लाल रेग का वस्त्र पहनना चाहिए । पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

देवता भजन

केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजा करना चाहिए । आपने जन्म नक्षत्र में गणेश होम करना, वृत लेकर पूर्ण चन्द्र (चतुरती) के चार दिन बाद गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगीत करना आदि से केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । कुछ ज्योतिषियाँ चामुण्डी देवी की पूजा करने के लिए सलाह देते है । जिनका केतू ओज राशी में है उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु युगम्म राशी में उनको चामुण्डी देवी की पूजा करना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद चन्द्र की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय

सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
नारायणो ही लोकानाम् सृष्टिस्थित्यान्तकारकः
शिखिनोनिष्टसंभुतम् दोषजातम् निरस्यतु

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । क्योंकि केतु के लिए कोई शासन करने वाला दिवस नहीं है अपने जन्म नक्षत्र के दिवस उपवास रखकर केतु पूजा करना चाहिए । आश्लेषा, मगह और मूल नक्षत्र के दिन में भी आप उपवास रख सकते है।

उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
केतु को शान्त करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि. लाल था काला रेशम आदि दान कर सकते है । सोना, चाँदीया पंच लोहो से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है ।

फूल

केतु को शान्त करने के लिए आप शिववन्ती, जपाकुसुम,नीला अपराजित ,नीला कमल, नील रंग को जपाकुसुम आदि पहनना चाहिए । फूलों को हाथ में लेकर नीचे दिए गए मन्त्र का आलापन करने के बाद पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरसो तेन प्रसीदतु शिखीमम

पूजा

केतु को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।केतु पूजा के लिए लाल और काले फूलों का उपयोग किया जाता है । जन्म नक्षत्र के दिवस पर या केतु दाश के शुरुआत में आप केतु पूजा कर सकते है । दरभा धास केतु को दान देना वाला मुख्य अंश है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

केत का मंत्र आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा केतु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ॐ चित्रगुप्ताय विदमेह
चन्द्रउच्चाय धीमहि
तन : केतु प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्दि प्राप्त होगा ।

केतु को प्रसन्न करने के लिए केतु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ॐ केतवे नम :
ॐ स्तूलशिरसे नम :
ॐ शीरो मात्राय नम :
ॐ द्वजकृतये नम :
ॐ सिंहिकासुरिगर्भसम्भवाय नम :
ॐ महाभीतिकराय नम :
ॐ चित्रवर्णाय नम :
ॐ श्री पिंगल्लाक्षाय नम :
ॐ भुल्लद्रुम्सकशय नम :
ॐ तीक्क्षदंष्ट्राय नम :
ॐ महारागाय नम :
ॐ रक्तनेत्राय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । केतु को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 2-11-2065 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :शुक्र

आपका शुक्र दाश 2-11-2065 को शुरु होता है ।

दाश के अधिपति का हानिकारक संयोग है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर शुक्र दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपको

अप्रत्याशितं मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए । दुसरो के साथ मिलते - जुलते में प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

शुक्र दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब शुक्र कमज़ोर है आपके इच्छानुसार खुशी और संतृप्ति प्राप्त नहीं होगा । लोगे और चीज़ो की ओर आपका दिलचस्प बदलता रहेगा । आपके इच्छानुसार दुसरों का प्यार और विश्वास पा सकते । आपके कार्यो और वित्तसम्बधी अवस्था में अप्रत्याशित बदलाव होग ।

अक्सर आपको शुक्र दाश में सुख - भोग से दिलचस्पी होगा । जब शुक्र गृह प्रतिकूल स्थान पर है तो यह प्रवृत्ति साधारण से भी अधिक होगा । इस समय धन खर्च करने पर स्वंय नियंत्रण रखना चाहिए ।

इस समय अपने परिवार को अधिक महत्व और संरक्षण देना चाहिए । दूसरो से मिलते जुलते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ज्यादार विपरीत लिंग के लोगें से ।

यात्र के समय था गाडी चलाते समय आपको अप्रत्याशित रुकावटों का सामना करना पड़ेगा । मेहनत करने पर असाधारण रुप से आप थक जाएगो ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शुक्र गृह प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शुक्र को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शुक्र दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

उज्वल रंग शुक्र गृह, के लिए प्रिय है । आप शुक्र को शांन्त करोन के लिए सफेद था नीले रेग के वस्त्र पहन सकते है । इस समय तंम रंग का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए । शुक्रवार को उज्वल रंग के कपड़े पहनना उचित है ।

जीवन रीति

शुक्र दाश में आपका जीवन शैली शुक्र के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । अपने विचारों और कर्म में सदाचार और स्वभाव को सयंम रखना चाहिए । दूसरों के साथ दया और मनमोहक व्यवहार प्रकट करना चाहिए । आपके घर और उसके चारों ओर साफ रखना चाहिए । इस समय साफ कपड़े पहनना चाहिए । दूसरों को दुख देने वाले वाक्यों का प्रयोग मत करें । विपरीत लिंग के लोगें से स्नेह और आदर की भाव प्रकट करना चाहिए । इन्दीय विषय सम्बधित आनंदो पर आपके इच्छा को जाँच करें । आप शादी या पारिवारिक सम्बधों के लिए रुकावट नहीं होना चाहिए और जो लोग किसी काम बाधा डालते है उनका साथ नहीं देना चाहिए । शादियों के लिए पुर्ण रुप से सहारा देना चाहिए । संगीत सुनने से आप शुक्र को शांन्त कर सकते है ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । शुक्र गृह को शान्त करने के लिए आपको शुक्रवार में वृत्त रखना चाहिए । देवियों के मंदिर में दर्शन और अपने योग्यता के अनुसार दान प्रधान करना लाभदायक है ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
शुक्र गृह को शान्त करने के लिए चाँदी से बना शुक्र का मूर्ति, अमारा विभिन्न रंग के रेशाम, वज्र, सफेद गाय, सफेद गोड़, सुगध द्रव्य आदि को दान देना चाहिए । अन्नपूर्णेशवरी देवी को शान्त करने के लिए भोजन दान देना लाभदायक है ।

फूल

शुक्र को शान्त करने के लिए आपको सफेद फूल पहनना चाहिए । फूलों को अपने हाथ में लेकर नीचे दिए गए मंत्र का आलापन करेक फूलों को पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन धैत्यमांत्री प्रसीदतु

ऊपर दिए गए परिहारा को 2-11-2085 तक आचारण करना चाहिए ।

नाम : **Sample Horoscope** (स्त्री)
जन्म राशी : **कुंम्भ**
जन्म नक्षत्र : **शताभिषा**

गृहस्थिती : 28-डिसंम्बर- 2015
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान में उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्व पूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिकता रखने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया गया है।

∇ (16-डिसंम्बर-2015 >> 15-जानुवरी-2016)

इस समय सूर्य अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

एक युवती होने के नाते हर कार्य में पूर्ण सुरक्षा की अपेक्षा रखने की आदी हैं। एक के बाद एक सफलता की श्रृंखला का सर्जन होनेवाला है। प्रगति के रास्तों से आगे बढ़नेवाली हैं। व्यापार वाणिज्य से उपार्जन हुआ धन लाभ का उपभोग करने का योग है। शेयर बाज़ार और जुए के प्रति मन आर्कषित होगा। सट्टे बाज़ार में भी दिलचस्पी पैदा होगी। आप भाग्यशाली हैं। इस कारण लाटरी टिकट से लाभ की संभावना भी है। अब आपका स्वास्थ्य आरोग्यपूर्ण रहनेवाला है।

∇ (15-जानुवरी-2016 >> 14-फेब्रुवरी-2016)

इस समय सूर्य बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

अब सूर्य अनुकूल रहनेवाला नहीं है। कार्यक्षेत्र को प्रभावित करनेवाले अनेक प्रश्न उत्पन्न होंगे। पति और उनके संबन्धियों से अयोग्य व्यवहार करने की संभावना रखते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जाग्रत रहना बुद्धिगम्य माना जायेगा। अगर टाल सकें तो अब यात्राओं से दूर ही रहें तो अच्छा होगा। स्वास्थ्य में कमज़ोरी का अनुभव होगा। रोग का शिकार बनना पड़ेगा। इस कारण सतर्क रहना अच्छा होगा। मानसिक शाँति के लिए प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। व्यर्थ के खर्चों से बच पाना कठिन होगा।

∇ (14-फेब्रुवरी-2016 >> 15-मार्च-2016)

इस समय सूर्य जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आप युवावस्था की ओर बढ़ रही हैं। मानसिक और शारीरिक परिपक्वता प्राप्त करनेवाली युवती हैं। चिंतन प्रणाली और भावना जगत में परिवर्तन की संभावना रखती हैं। अभिलाषा में भी परिवर्तन का अनुभव होगा। चारों ओर बन रहे परिवर्तनों के साथ सहयोग रखने से अनुकूल स्थिति उत्पन्न होगी। आपके व्यवसाय क्षेत्र में या निवास स्थान में परिवर्तन होने की संभावना रखती हैं। अभ्यास क्षेत्र में परिवर्तन

हो सकता है। छोटी-मोटी मुश्किलों के बीच से गुज़रना होगा। प्रवृत्ति क्षेत्र अथवा यात्रा संबन्धी समस्यायें उत्पन्न होगी। अनेक प्रयासों के बावजूद भी इन समस्याओं से संपूर्ण रूप से मुक्त होना असंभव हैं। अकारण क्रोधित होना सामान्य बात होगी।

गुरु का गोचर फल।

हर राशि में गुरु एक साल तक रहता है। गुरु के कारण अति महत्वपूर्ण अनुभव होते रहते हैं। आपकी चन्द्र राशि में वर्तमान में वह क्या फल देगा, यह नीचे दर्शाया जा रहा है।

▽ (15-जूलाई-2015 >> 11-अगस्त-2016)

इस समय गुरु सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

महिमापूर्ण जीवन के कार्यों में गुरु की शक्ति प्रतिभाशील रहेगी। पुरुष वर्ग के समूह में मान्यता उपलब्ध होगी। आकर्षण और प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त होगा। इस समय कार्यकुशलता भरी निपुणता प्रकट होगी। समूह के बीच महिला रत्न मानी जायेंगी। आपके सहयोगियों तथा मित्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। ज़िम्मेदारी के कार्य का निर्वाह बड़ी सुन्दरता से किया जायेगा और इस कारण आपका समूह में स्वागत किया जायेगा। असाधारण मान्यता तथा सम्मान प्राप्त होगा। विवाह संबन्धी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

▽ (12-अगस्त-2016 >> 12-सितंम्बर-2017)

इस समय गुरु आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

अब गुरु प्रतिकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। एक के बाद एक कठिनाईयाँ और विघ्नों की श्रृंखला उत्पन्न होनेवाली है। इस कारण मन उद्वेग से भर उठेगा। अनेक कार्यों से मन पीछे हट जाने का प्रयास करेगा। निरुत्साही बनना पड़ेगा। असाधारण प्रकार से क्रोधित होना पड़ेगा। स्त्री को शोभा न देनेवाला क्रोध आप में प्रकट होगा। सशक्त मन की अगाधता में कोई विचित्र प्रकार की धुन का अनुभव होगा। इस प्रकार के अनुभव साधारण स्थिति में कौमार्यकाल के अनुभव से दुःख पैदा करनेवाले होते हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ न हो उसके प्रति जागृत रहना अनिवार्य है। साक्षात्कार, प्रतियोगिता और महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल न होगा।

शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि का गोचर संचार शुभ नहीं होता। शनि के प्रभाव के कारण निराश होना पड़ता है और मन उद्वेग से भर उठता है। फिर भी अनुकूल ग्रह योग स्थिति में अप्रतिक्षित लाभ भी दिलानेवाला होता है। हर राशि में शनि दो वर्ष और छेः महीने तक स्थान गृहण करता है।

▽ (3-नवेम्बर-2014 >> 26-जानुवरी-2017)

इस समय शनि दशावाँ भाव का सक्रमण करेगा

हर मार्ग से सफलता को प्राप्त करने की कोशिश जारी रहेगी। आप में शौर्य का जागरण होगा जो एक स्त्री के लिए शोभनीय नहीं रहेगा। व्यर्थ के मतभेद को लेकर पति के साथ कलह होगा। परिवार के बीच भी कलह होगा। मानसिक सन्तुलन बनाये रखना असंभव होगा। सोचे समझे बिना हर कार्य में कूद पड़ने की संभावना दिखती हैं। परिवार की बदनामी न हो इस बात का ध्यान रखें तो फिर कुछ या प्राप्त होगा और सम्मानित होंगी। अभ्यास क्षेत्र में प्रगति प्राप्त करना कठिन होगा। साहित्य कार्य में (लेखन इत्यादि) कमी का अनुभव होगा। अब आप कण्टक शनि के बुरे गोचर से गुज़र रही हैं।

∇ (27-जानुवरी-2017 >> 21-जून-2017)

इस समय शनि अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

आप स्वयं भाग्यवान हैं ऐसा भ्रम होगा। परिवार के बीच और बाहरी क्षेत्र में एक समर्थ स्त्री कहलायेंगी। इस कारण सभी लोगों से बहुमानित होगी। धन-संपत्ति में कोई कमी नहीं रहेगी। धारणा के युक्त काम आगे नहीं बढ़ेंगे। उल्टे गति में कमी का अनुभव होगा। कुछ समय के बाद आप गतिशील बनेंगी। बच्चे संतोष का अनुभव करेंगे। जो कार्य अनेक बाधाओं से रुके पड़े थे वे गतिमान होंगे और इस कारण स्वस्थता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ और उच्चतर कार्यालयों से अनुमोदनीय बुलावे प्राप्त होंगे। मान्यता भी प्राप्त होगी। पति के साथ उल्हासमय, रस भरपूर जीवन बिताने की स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा। लाभ के स्रोतों में वृद्धि की आशा कर सकती हैं।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	21-12-2008	04-07-2011	अनुकूल
गुरु	बुध	04-07-2011	09-10-2013	अनुकूल
गुरु	केतु	09-10-2013	15-09-2014	अनुकूल
गुरु	शुक्र	15-09-2014	16-05-2017	उचित
गुरु	रवि	16-05-2017	04-03-2018	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	04-03-2018	04-07-2019	उचित
गुरु	मंगल	04-07-2019	09-06-2020	उचित
गुरु	राहु	09-06-2020	03-11-2022	अनुकूल
शनि	शुक्र	24-08-2029	24-10-2032	अनुकूल
शनि	चन्द्र	06-10-2033	07-05-2035	अनुकूल
शनि	मंगल	07-05-2035	15-06-2036	अनुकूल
शनि	गुरु	22-04-2039	02-11-2041	अनुकूल
बुध	शुक्र	28-03-2045	27-01-2048	अनुकूल
बुध	चन्द्र	02-12-2048	04-05-2050	अनुकूल
बुध	मंगल	04-05-2050	01-05-2051	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल

27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

१८ उम्रे से लेकर ५० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	21-12-2008	04-07-2011	अनुकूल
गुरु	शुक्र	15-09-2014	16-05-2017	अनुकूल
गुरु	राहु	09-06-2020	03-11-2022	अनुकूल
शनि	बुध	05-11-2025	15-07-2028	अनुकूल
शनि	केतु	15-07-2028	24-08-2029	अनुकूल
शनि	शुक्र	24-08-2029	24-10-2032	उचित
शनि	रवि	24-10-2032	06-10-2033	अनुकूल
शनि	चन्द्र	06-10-2033	07-05-2035	अनुकूल
शनि	मंगल	07-05-2035	15-06-2036	अनुकूल
शनि	राहु	15-06-2036	22-04-2039	उचित
शनि	गुरु	22-04-2039	02-11-2041	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल विवाहायोग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	21-12-2008	04-07-2011	अनुकूल
गुरु	बुध	04-07-2011	09-10-2013	अनुकूल
गुरु	केतु	09-10-2013	15-09-2014	अनुकूल
गुरु	शुक्र	15-09-2014	16-05-2017	उचित
गुरु	रवि	16-05-2017	04-03-2018	उचित

गुरु	चन्द्र	04-03-2018	04-07-2019	उचित
गुरु	मंगल	04-07-2019	09-06-2020	उचित
गुरु	राहु	09-06-2020	03-11-2022	अनुकूल
शनि	शुक्र	24-08-2029	24-10-2032	अनुकूल
शनि	रवि	24-10-2032	06-10-2033	अनुकूल
शनि	चन्द्र	06-10-2033	07-05-2035	अनुकूल
शनि	मंगल	07-05-2035	15-06-2036	अनुकूल
शनि	गुरु	22-04-2039	02-11-2041	अनुकूल
बुध	शुक्र	28-03-2045	27-01-2048	अनुकूल
बुध	रवि	27-01-2048	02-12-2048	अनुकूल
बुध	चन्द्र	02-12-2048	04-05-2050	अनुकूल
बुध	मंगल	04-05-2050	01-05-2051	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल

01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पञता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	21-12-2008	04-07-2011	अनुकूल
गुरु	बुध	04-07-2011	09-10-2013	अनुकूल
गुरु	केतु	09-10-2013	15-09-2014	अनुकूल
गुरु	शुक्र	15-09-2014	16-05-2017	उचित
गुरु	रवि	16-05-2017	04-03-2018	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	04-03-2018	04-07-2019	अनुकूल
गुरु	मंगल	04-07-2019	09-06-2020	अनुकूल
गुरु	राहु	09-06-2020	03-11-2022	अनुकूल
शनि	शुक्र	24-08-2029	24-10-2032	अनुकूल
शनि	गुरु	22-04-2039	02-11-2041	अनुकूल
बुध	शुक्र	28-03-2045	27-01-2048	अनुकूल
बुध	गुरु	18-11-2053	23-02-2056	अनुकूल
केतु	गुरु	21-10-2062	27-09-2063	अनुकूल
शुक्र	रवि	04-03-2069	04-03-2070	अनुकूल
शुक्र	चन्द्र	04-03-2070	03-11-2071	अनुकूल
शुक्र	मंगल	03-11-2071	02-01-2073	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित

06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5*	3	5*	3	3	4	26
वृषभ	4	4	5	6	4	6	3	32
मिथुन	6	2	2	4	2	5	3	24
कर्क	5	4	6	4	5	3	5	32
सिंह	3	3	6	4	4	6*	1	27
कन्या	3	4	4	3	5	3	2	24
तुला	4	5	3	4	1	4	3	24
वृशचिक	5	5	5	5	3	5	4	32
धनु	5	6	6	4	3	7	5	36
मकर	3	4	3	4	4	4	4*	26
कुंम्भ	4*	4	6	4	3*	4	3	28
मीन	4	2	5*	5	2	6	2	26
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न कर्क में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के प्रभाव से आपका भाग्य अपने जन्मकुण्डली में उपस्थित चार बिन्धुओं के कारण होगा । आपको भाग्यशाली ताबीज या भाग्य का सन्देश पहुँचने वाला कहा जाएगा । यह प्रभाव आपके परिवार के संतोष और समृद्दि का कारण बन जाएगा ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

सूर्य के अष्टकवर्गा में पाँच बिन्धु है और आप धर्मनिष्ट लोगों के साथ होगा । आपको ज्ञान और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगा । आपके सफलताओं पर लोग प्रंशसा करेगें । आपको कभी भी नए कपडों से प्यार नहीं होगा । अपने यौवन और बचपन के समय बहुत से उत्सवों को मना सकते है ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

बुध के अष्टकवर्गा में उपस्थित पाँच बिन्धु आपके भाग्य का अनुकूल होगा । आपके कोमल और मैत्रीपूर्ण प्रकृति आपको प्रसिद्ध बनाएगा । दूसरों के दुख को समझने की शक्ति से आप लोगें के साथ अच्छा सम्बध रख सकते है ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपको जीवन का सबसे अच्छा चीज अपने दोस्तों के सहयोग से मिलेगा ।सामाजिक रुप से स्वीकृत कोमलता और प्रसिद्दि आपके व्यक्तित्व को सूचित करता है और यह आपके सफलता का मुख्य तत्व है । अपने सामाजिक योग्यताओ से आप मानवीय और कर्मचारी अनुशासन सम्बधित क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते है ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु यह सूचित करता है कि आपको अपने प्रिय लोगें से दूर रहना पडेगा । यह आपके विदेशी उधोग के कारण होगा । आप इस वियोग को पूर्ण रुप से आनन्द नहीं कर साकेगो फिर भी आपको यह सहना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपके भाग्य में धन और सम्पत्ति की देवी आपके ऊपर हसँने और अनुग्रहित करने में रोक नहीं डालेगी । गुरु के अष्टकवर्गा में छः बिन्धुओं का असाधारण उपस्थिति से आप अनुग्रहित होगों । इससे आपको कभी भी धन और वाहने की कमी नहीं होगा । इन दानो का सेवा हमेशा आपके साथ होगा ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करता है । अपने परिवार रिशतेदारो और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली ग्यारहवी भाव को दसवी भाव से ज्यादा बिन्धु है, लेकिन बारहवी भाव को ग्यारहवी भाव से कम बिन्धु है और उदीयमान में उपस्थित बिन्धु ग्यारहवी से भी महत्व है । अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्दि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर धटित है जिनके गृहों का प्रभाव आपके जैसे हो । आपका समृद्दि और प्रसिद्दि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगा । जरुर ही आपका एक अनुग्रहित जीवन होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्दि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २७ और २६   उम्र में होगा ।

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[LifeSign 14.0.0.0]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.